18

''समझदारी से चलो''
(भाग 2)

(6:1-20)

माता-पिता और बच्चों के रूप में सम्बन्धों का सम्मान करना (6:1-4)

6:1-4 में पौलुस ने मसीही लोगों को समझदारी से चलने के सम्बन्ध में 5:15 में आरम्भ हुई चर्चा को आगे बढ़ाया।

यूनानी-रोमी संसार में पिता का अपने बच्चों पर पूरा नियन्त्रण और ज़िम्मेदारी होती थी। उसके नियन्त्रण से प्रशिक्षण और अनुशासन मिलता था और उसे यहां तक अधिकार था कि वह बच्चे को बेच या मार भी सकता था। परन्तु आम विचार से कठोर व्यवहार की आलोचना की जाती थी। यहूदी मत में माता-पिता, विशेषकर पिताओं के अधिकार पर ऐसा ही ज़ोर दिया जाता था। पुराने नियम में अपने माता-पिता का आदर न कर पाने वाले आज्ञा ने मानने वाले बच्चों को मृत्युदण्ड का प्रावधान था (लैव्यव्यवस्था 20:9; व्यवस्थाविवरण 21:18-21)। फ़्लेवियस जोसेफस ने यहूदी माता-पिताओं को परामर्श दिया कि आज्ञा ने मानने वाले बालक को ताड़ना दी जाए। फिर यदि उस बच्चे ने अपने माता-पिता की ताड़ना नहीं मानी तो परामर्श यह था कि ''... इस कारण उसे इन्हीं माता-पिता के द्वारा लोगों की भीड़ के आगे-आगे नगर से बाहर ले जाकर वहां उस पर पथराव करा दिया जाए।''[1] इस पर बहस होती है कि ऐसी कठोर सज़ा वास्तव में दी जाती थी या नहीं, परन्तु यह बात पक्की है कि माता-पिता को बच्चे पर पूरा नियन्त्रण होता था।

बच्चों के प्रशिक्षण के लिए यहूदियों की पाठ्य पुस्तक मूसा की व्यवस्था थी। इसमें माता-पिता से कहा गया था:

> ''ये आज्ञाएं जो मैं आज तुझ को सुनाता हूं वे तेरे मन में बनी रहें; और तू इन्हें अपने बाल-बच्चों को समझाकर सिखाया करना, और घर में बैठे, मार्ग पर चलते, लेटते, उठते, इनकी चर्चा किया करना'' (व्यवस्थाविवरण 6:6, 7)।

इस्राएल को दिए गए अपने संदेशों के अन्त में मूसा ने कहा, ''जितनी बातें मैं आज तुम से चिताकर कहता हूं उन सब पर अपना अपना मन लगाओ, और उनके अर्थात इस व्यवस्था की सारी बातों के मानने में चौकसी करने की आज्ञा अपने लड़के बालों को दो'' (व्यवस्थाविवरण 32:46)।

पुराने नियम में दिए गए निर्देशों में बच्चों के अनुशासन की बात एक महत्वपूर्ण सबक था। नीतिवचन 22:6 में सुलैमान ने कहा था, ''लड़के को उसी मार्ग की शिक्षा दे जिसमें उसको

चलना चाहिए और वह बुढ़ापे में भी उससे न हटेगा।'' उसने और कहा था, ''जो बेटे पर छड़ी नहीं चलाता वह उसका बैरी है, परन्तु जो उस से प्रेम रखता, वह यत्न से उसको शिक्षा देता है'' (नीतिवचन 13:24) और ''लड़के की ताड़ना न छोड़ना; क्योंकि यदि तू उसको छड़ी से मारे, तो वह न मरेगा'' (नीतिवचन 23:13)।

इस पृष्ठभूमि के विरुद्ध पौलुस ने माता-पिता को अपने बच्चों पर अधिकार पर ज़ोर दिया। जो कुछ पौलुस ने 6:1-4 में माता-पिता और बच्चों को कहा वह हर किसी के मसीह के अधिकार के अधीन होने और एक दूसरे का सम्मान करने के नियम को मानने को ध्यान में रखकर कहा। यहां पर बताई गई जिम्मेदारियों को पूरा करने से बच्चों की ओर से आज्ञापालन और पिता की ओर से धीरज और गालियां निकालने से परहेज़ कर, निर्देश और पिताओं की ओर से काम में रुकावट है।

हे बालको: ''आदर करो और आज्ञा मानो'' (6:1-3)

[1]हे बालको, प्रभु में अपने माता-पिता के आज्ञाकारी बनो, क्योंकि उचित है। [2]अपनी माता और पिता का आदर कर (यह पहली आज्ञा है, जिस के साथ प्रतिज्ञा भी है)। [3]कि तेरा भला हो, और तू धरती पर बहुत दिन जीवित रहे।

आयत 1. *Tekna* का अनुवाद **हे बालको** पवित्र शास्त्र में जाने वाले विश्वासियों के लिए इस्तेमाल किया गया है जो परमेश्वर की संतान बन गए हैं (रोमियों 8:16, 17; 1 यूहन्ना 3:10) और सांसारिक परिवारों में बच्चों के लिए इस्तेमाल किया गया है। सांसारिक बच्चों के लिए इस्तेमाल करने पर इस शब्द में उम्र को ध्यान में नहीं रखा जाता। यह छोटे बच्चे (जैसा मत्ती 18:1-6 में संकेत है) या बड़े बच्चे (देखें 1 तीमुथियुस 5:4) के लिए हो सकता है।

इफिसियों में जिन्हें ''हे बालको'' कहा गया है वे इतने बड़े अवश्य होंगे जो उन्हें दिए गए निर्देश को समझ सकते हैं; इसके अलावा वचन यह संकेत देते हुए लगता है कि वे कलीसिया के सदस्य थे। **प्रभु में** होने के लिए, जो इस पत्र में और कहीं भी इस्तेमाल किया गया है (2:21; 5:8; 6:10, 21) का अर्थ मसीही होना ही होगा। यदि हम इस वाक्यांश को माता-पिता के साथ जोड़ दें तो एक प्रश्न खड़ा होता है कि क्या गैर मसीही माता-पिता के बच्चों को उनकी आज्ञा मानने की जिम्मेदारी नहीं है? बेशक यह उसके विपरीत था जिसे पुराने नियम और प्राचीन जगत में माना जाता था। बच्चे अपने माता-पिता के अधिकार में होते थे। ''प्रभु में'' को बेहतर ढंग से समझने के लिए ''बालकों'' को ''प्रभु में बालकों'' या उन बच्चों के रूप में कहना चाहिए जो मसीही बन चुके हैं। इसलिए हम मान सकते हैं कि वे बच्चे और माता-पिता जिनकी यहां बात हो रही है दोनों मसीही थे, क्योंकि दोनों को कलीसिया की बिरादरी का भाग माना गया था।

एंड्रयू टी. लिंकोन ने इस परिस्थिति को यह दावा करते हुए संक्षिप्त किया है कि ये बालक ''इतने बड़े थे कि उन्हें अपने प्रभु के साथ सम्बन्ध की समझ थी और इस आधार पर उससे विनती की जा सकती है, परन्तु वे बड़े होने की प्रक्रिया में अभी भी छोटे ही थे [देखें इफिसियों 6:4]।''[2] अन्य शब्दों में यह वचन उन बालकों पर लागू होता है जो मसीही तो है पर अभी अपने माता-पिता के अधिकार में हैं।

बच्चों का अपने माता-पिता के आज्ञापालन, पत्नियों के अधीन होने जैसा ही है, जिन्हें अपने अपने पतियों के अधीन ऐसे होने को कहा गया था, ''जैसे प्रभु के'' (5:22)। मसीही बच्चे जब अपने माता-पिता के **आज्ञाकारी** होते हैं तो प्रभु के आज्ञाकारी होते हैं। माता-पिता की आज्ञा न मानना अन्यजाति संसार के अविश्वासियों की नकल करना (रोमियों 1:30) और उस बुराई के भागीदार बनना था जो ''अन्तिम दिनों'' की पहचान होनी थी (2 तीमुथियुस 3:1, 2)।

क्योंकि उचित है बच्चों के अपने माता-पिता का आज्ञापालन करने का एक आवश्यक कारण देता है। पहले तो माता-पिता का अधिकार और उस अधिकार के प्रति बच्चों की अधीनता प्राचीन जगत में और इस्राएल के साथ बांधी गई परमेश्वर की वाचा में पाई जाती थी। दूसरा पौलुस ने कहा कि बच्चों का प्रति माता-पिता के आज्ञाकार होना प्रभु के आज्ञाकार होना था। तीसरा, प्रेरित ने कहा, ''क्योंकि यह उचित है''; अन्य शब्दों में आज्ञा मानना सही काम है। फिर उसने व्यवस्था में से उद्धृत करते हुए बच्चे के अपने माता-पिता का आज्ञापालन करने की उपयुक्तता पर ज़ोर दिया।

आयतें 2, 3. हम पढ़ते हैं, **अपनी माता और पिता का आदर कर**।[3] ''आदर'' के लिए यूनानी क्रिया शब्द *timaō* है जिसे लोगों के सम्बन्ध में इस्तेमाल करने पर इसका अर्थ ''मूल्यांकन करना और मूल्य ठहराना'' है।

> इसलिए किसी का आदर करना उस व्यक्ति का सही सही और ईमानदारी से मूल्यांकन करना और उसके साथ श्रद्धा, आदर, भक्ति, दयालुता, शिष्टाचार और आज्ञापालन से व्यवहार करना है जो जीवन में उसकी स्थिति या उसके व्यवहार की हार हो।[4]

यह हो सकता है कि कोई बच्चा अपने माता-पिता की आज्ञा बिना उनका आदर करते हुए मानें, परन्तु वह आज्ञाकार हुए बिना उन का आदर नहीं कर सकता। इसलिए बच्चों के अपने माता-पिता के आज्ञाकार होने, के लिए पौलुस का यह चौथा कारण था। आज्ञापालन आदर से होना चाहिए। उसने आज्ञापालन पर फिर से ज़ोर दिया जो कि आदर का स्वाभाविक परिणाम है। उसने ध्यान दिलाया कि आदर करने की बात दस आज्ञाओं में पांचवीं आज्ञा थी (निर्गमन 20:12)।

पौलुस द्वारा कही गई कोष्ठक वाली बात (यह पहली आज्ञा है जिसके साथ प्रतिज्ञा भी है) ने कई टीकाकारों को उलझाया है, क्योंकि कुछ लोग एक प्रतिज्ञा को देखते हैं जो दस आज्ञाओं में पहले की गई थी। दूसरी आज्ञा के बाद परमेश्वर ने कहा कि वह ''हज़ारों पर करुणा'' कर रहा था (निर्गमन 20:6)। परन्तु यह केवल परमेश्वर के स्वभाव के कारण था:

> ... क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर यहोवा जलन रखने वाला ईश्वर हूं, और जो मुझ से बैर रखते हैं, उनके बेटों, पोतों, और परपोतों को भी पितरों का दण्ड दिया करता हूं, और जो मुझ से प्रेम रखते और मेरी आज्ञाओं को मानते हैं, उन हजारों पर करुणा किया करता हूं (निर्गमन 20:5, 6)।

कुछ लोग विरोध कर सकते हैं कि दस आज्ञाओं में से केवल पांचवीं आज्ञा ही है, जिसमें प्रतिज्ञा है, जबकि पौलुस ने कहा कि यह पहली आज्ञा है। परन्तु दस आज्ञाओं में पूरी व्यवस्था

थी, जिसमें छह सौ से अधिक आज्ञाएं और कई प्रतिज्ञाएं मिलती थीं।

जिस ''प्रतिज्ञा'' का पौलुस ने यहां पर संकेत दिया उसका क्या महत्व है ? पांचवीं आज्ञा नये नियम में चाहे कम से कम पांच और बार दोहराई गई है परन्तु प्रतिज्ञा की बात केवल इफिसियों की पुस्तक में है। यह प्रतिज्ञा कि **तेरा भला हो, और तू धरती पर बहुत दिन जीवित रहे** कनान देश के लगातार कब्जे के लिए इस्राएल के सम्बन्ध में की गई थी। पौलुस के इफिसियों को लिखते समय उसके मन में कनान देश के कब्जे की बात नहीं थी। पौलुस को मालूम था कि इस्राएल को दी गई पुराने नियम की प्रतिज्ञाएं मसीह और उसकी कलीसिया के आने से पूरी हो चुकी हैं (देखें रोमियों 4; 8; गलातियों 3; 4)। अब्राहम और उसकी संतान को दी गई देश की प्रतिज्ञा (देखें उत्पत्ति 12:7; 13:15; 15:18) यहोशू द्वारा देश पर कब्जा कर लेने के समय बहुत पहले पूरी होते देखी गई थी (देखें यहोशू 21:43-45; 23:14)। इसके अलावा इफिसी कलीसिया में गैर यहूदी भी थे, जिनके मन में कभी इन शब्दों को पढ़ते हुए कनान देश की बात नहीं आनी थी। पौलुस ने इफिसुस की कलीसिया में सभी बच्चों को अपने माता-पिता की आज्ञा मानने और उनका आदर करने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए प्रतिज्ञा का इस्तेमाल किया।

पौलुस ने जब यह कहा कि ''तेरा भला हो, और तू धरती पर बहुत दिन जीवित रहे'' तो उसके कहने का अर्थ क्या था? पौलुस ने जब अपने अन्य पत्रों में प्रतिफलों की बात की तो उन्हें सांसारिक प्रतिफल के साथ उतना नहीं जोड़ा जितना अन्तिम न्याय के प्रति होता है (देखें 1 कुरिन्थियों 3:8, 12-15; 2 कुरिन्थियों 5:10)। इस जीवन में प्रतिफल की बात यदि उसने की तो तब जब उसने कहा, ''क्योंकि देह की साधना से कम लाभ होता है, पर भक्ति सब बातों के लिए लाभदायक है, क्योंकि इस समय के और आने वाले जीवन की भी प्रतिज्ञा इसी के लिए है'' (1 तीमुथियुस 4:8)। इस प्रतिज्ञा को जोड़े जाने का अर्थ यह नहीं लिया जाना चाहिए कि हर बच्चा जो अपने माता-पिता की आज्ञा मानता और उनका आदर करता है उसे एक लम्बा और खुशहाल जीवन मिलने की गारंटी है। पौलुस केवल इतना देख रहा था कि हर बात पर विचार करने पर, जो बच्चा अपने माता-पिता की आज्ञा मानता और उनका आदर करता है उसका आम तौर पर भला ही होता है। उसका जीवन दूसरों की अपेक्षा जो इन आज्ञाओं को अनदेखा करते हैं प्रसन्न और भरपूर होगा।[5]

समझदारी से चलने के लिए बच्चों के लिए अपने माता-पिता की आज्ञा मानना और उनका आदर करना आवश्यक है। छोटे बच्चों को आज्ञापालन के द्वारा अपने माता-पिता का आदर करना आवश्यक है और बड़े बच्चों को अपने बुजुर्ग माता-पिता की देखभाल करके उनका आदर करना अवश्य है (देखें 1 तीमुथियुस 5:4, 8)।

हे पिताओ: ''शिक्षा और चेतावनी दो'' (6:4)

[4]और हे बच्चे वालो अपने बच्चों को रिस न दिलाओ परन्तु प्रभु की शिक्षा, और चेतावनी देते हुए, उन का पालन-पोषण करो।

आयत 4. आयत 1 में ''माता-पिता'' की बात करते हुए पौलुस ने यूनानी संज्ञा शब्द *goneus* का इस्तेमाल किया और आयत 2 में अपनी माता और पिता की बात करते हुए उसने

अधिक सामान्य शब्दों *patēr* और *mētēr* का इस्तेमाल किया। परन्तु इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने मूसा के माता-पिता की बात करते हुए *patēr* के बहुवचन रूप का इस्तेमाल किया जिसका अर्थ पिता और माता दोनों है (इब्रानियों 11:23)। 6:1-4 में पौलुस न तीन अलग अलग शब्दों का इस्तेमाल किया, जिसमें एक ''पिता'' के लिए, और एक ''माता'' के लिए और तीसरा ''माता-पिता'' के लिए है जिस कारण हम निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि आयत 4 में वह मुख्यतया **पिताओं** से बात कर रहा था, क्योंकि वहां पर *patēr* का बहुवचन शब्द है। बच्चों के प्रशिक्षण में बेशक माताओं का योगदान होता है परन्तु प्रशिक्षण में अगुआई की मुख्य ज़िम्मेदारी पिताओं को दी गई है। यूनानी धर्मशास्त्र में आयत 4 के आरम्भ में *kai* (''और'') है (देखें KJV)। यह तथ्य इस बात का सुझाव देता है कि सम्बन्ध में बच्चों और पिताओं दोनों को परमेश्वर की ओर से जिम्मेदारियां दी गई हैं।

अपने बच्चों को रिस न दिलाओ पिताओं को यह दिखाने के लिए कि समझदारी से कैसे चलना है पौलुस के निर्देश का आरम्भ था। ''रिस'' *parorgizō* से लिया गया है जिसकी परिभाषा ''क्रोध भड़काना, रिस दिलाना, उभारना, गुस्सा दिलाना'' के रूप में की जाती है।[6]

> इसमें व्यवहारों, शब्दों और कामों से जिन से बच्चे का क्रोध या नाराज़गी भड़के जिससे अत्याधिक कठोर अनुशासन को, बेतुकी कठोर मांगों, अधिकार के दुरुपयोग, मनमानियों, पक्षपात, बार बार दोष निकालने और दण्ड देने से बचना शामिल है।[7]

एक समानान्तर आयत कुलुस्सियों 3:21 में पौलुस ने यह पंक्ति जोड़ दी कि ''उनका साहस न टूट जाए।'' बच्चों के साथ बार-बार पक्षपात पूर्ण व्यवहार से उन के मन में निराशा हो सकती है जिससे वे अपने पिताओं को प्रसन्न न कर पाएं।

बच्चों को प्रशिक्षण देने के सकारात्मक पक्ष में पौलुस ने कहा, **प्रभु की शिक्षा, और चेतावनी देते हुए, उन का पालन-पोषण करो।** ''पालन-पोषण'' के लिए यूनानी क्रिया शब्द (*ektrephō*) का अनुवाद 5:29 में ''पालन पोषण'' किया गया है। इस शब्द का सामान्य अर्थ में बच्चे के प्रशिक्षण का व्यापक अर्थ होगा, जिसमें अगले दो शब्द शिक्षा के अधिक विशिष्ट पहलुओं की बात करते हैं। नये नियम में *ektrephō* का व्यापक अर्थ (देखें प्रेरितों 7:22; 22:3; 2 तीमुथियुस 3:16; तीतुस 2:12) और विशिष्ट अर्थ (देखें 1 कुरिन्थियों 11:32; 2 कुरिन्थियों 6:9; इब्रानियों 12:5, 7, 8, 11) दोनों हैं।[8] ''शिक्षा'' और ''चेतावनी'' ''को पालन पोषण'' के लिए आवश्यक है क्योंकि ''पालन पोषण'' सामान्य है और ''शिक्षा'' और ''चेतावनी'' विशिष्ट हैं जिनका इस्तेमाल ताड़ना के अर्थ में किया गया है।

''शिक्षा'' (*paideia*) का अर्थ ''जिम्मेदार जीवन के लिए मार्गदर्शन देने का कार्य'' है।[9] इस शब्द में ''बच्चों को पूरा प्रशिक्षण और शिक्षा'' और ''समझ और नैतिकताएं डालना ... आज्ञाएं और ताड़नाएं, [के साथ-साथ] समझाना और दण्ड देना'' शामिल है।[10]

''शिक्षा'' के बाद पौलुस ने ''चेतावनी'' (*nouthesia*) की बात की। इस शब्द का मुख्य अर्थ ''ताड़ना देना'' है (देखें रोमियों 15:14; 1 कुरिन्थियों 4:14; 10:11; कुलुस्सियों 1:28; 3:16; तीतुस 3:10)। इसका ''अभिप्राय यह है कि ताड़ना पाने वालों के व्यवहार में कुछ कठिनाई या परेशानी है जिससे सुलझाया जाना या कुछ विरोध पर काबू पाना आवश्यक है।''[11]

निष्कर्ष यह है कि पिताओं को अपने बच्चों का पालन-पोषण (*ektrephō*) करने के लिए आवश्यक सारा प्रशिक्षण देने की ज़िम्मेदारी है ताकि वे समाज और कलीसिया में अच्छे नागरिक बन सकें। ऐसा शिक्षा के द्वारा दिलेर किया जाना आवश्यक है जिस में चेतावनी और अनुशासन (*paideia*) और प्रोत्साहन (*nouthesia*) शामिल है जिसमें गलत व्यवहार के लिए सुधार और सही व्यवहार के लिए प्रशंसा की जाती है।

फिर ''प्रभु की'' से पिताओं के ''शिक्षा और चेतावनी'' की बात मेल खाती है। आयत 4 को बेहतरीन ढंग से समझने के लिए इसका अर्थ ''मसीही प्रशिक्षण अर्थात वह प्रशिक्षण जो मसीह का है, जो उस से मिलता है और जो उसके द्वारा दिया जाता है।''[12]

पहले पौलुस ने इफिसियों को उन लोगों के रूप में बताया था, जिन्होंने मसीह की शिक्षा पाई, उसके विषय में सुना और उन्हें उस में सत्य सिखाया गया था (4:20, 21)। इससे संकेत मिला था कि ''शिक्षा और चेतावनी'' जो अपने बच्चों को पिताओं द्वारा दी गई थी वही थी जो कलीसिया को दी जानी थी।[13]

स्वामियों और दासों के रुप में सम्बन्धों का सम्मान करना (6:5-9)

यूनानी-रोमी संसार में दासता की प्रथा एक स्वीकृत तथ्य था। ऐसे समाज में जहां दासता जीवन का एक ढंग था, यह उम्मीद की जाती थी कि दासों के कुछ स्वामी मसीही बन जाएंगे, जबकि उनके दास मसीही नहीं बनेंगे। कुछ दास मसीही बन जाएंगे जबकि उनके स्वामी मसीही नहीं बनेंगे। कुछ मामलों में दास और स्वामी दोनों ही मसीह के चेले बन जाएंगे। यह आश्चर्य की बात नहीं है कि नये नियम में मसीही स्वामियों और दासों दोनों के लिए निर्देश दिए गए कि अलग-अलग परिस्थितियों में वे एक दूसरे के साथ कैसे व्यवहार करें।[14]

नया नियम दासता का न तो समर्थन करता है और न ही खण्डन। इस बड़ी सामाजिक बुराई का खण्डन करने के बजाय परमेश्वर की प्रेरणा पाए हुए पहली सदी के लेखकों ने इसे नियमित कर दिया। जब सुसमाचार के नियम मानवीय सम्बन्धों पर पूरी तरह से लागू हो जाने थे (देखें मत्ती 7:12; 22:39), तो दासता अपने आप खत्म हो जानी थी। तब तक नये नियम के लेखकों ने दासता को मिटाने या दासों को विद्रोह करने के लिए नहीं कहा। उन्होंने केवल कुछ ईश्वरीय मार्गदर्शन तय कर दिए।

इफिसियों 6:5-9 में पौलुस ने मसीही दासों और स्वामियों को यह समझने के लिए सिखाया कि वे एक ही स्वामी अर्थात मसीह की सेवा कर रहे हैं। इफिसियों के बाहर के वचन भी इस समय के दौरान जब दासप्रथा पाई जाती थी, मसीही लोगों की अगुआई के लिए सहायक थे।

हे दासो: ''आज्ञाकार बनो'' (6:5-8)

[5]हे दासो, जो लोग शरीर के अनुसार तुम्हारे स्वामी हैं, अपने मन की सीधाई से डरते, और कांपते हुए, जैसे मसीह की, वैसे ही उन की भी आज्ञा मानो। [6]और मनुष्यों को प्रसन्न करने वालों की नाईं दिखाने के लिए सेवा न करो, पर मसीह के दासों की नाईं मन से परमेश्वर की इच्छा पर चलो। [7]और उस सेवा को मनुष्यों की नहीं, परन्तु प्रभु की जानकर

सुइच्छा से करो। [8]क्योंकि तुम जानते हो, कि जो कोई जैसा अच्छा काम करेगा, चाहे दास हो, चाहे स्वतन्त्र; प्रभु से वैसा ही पाएगा।

''और अध्ययन के लिए: दासता'' में स्वामियों और दासों से सम्बन्धित ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और बाइबल की शिक्षा इफिसियों की इस भाग की व्याख्या में सहायक हैं। इस चलन को कलीसिया में स्वामियों और दासों पर लागू करते हुए पौलुस अभी भी समझदारी से चलने की बात कर रहा था।

आयत 5. स्वामियों और दासों का, अन्त में एक ही स्वामी था और वह स्वामी मसीह है (6:6, 9)। परन्तु पारिवारिक दायित्वों में **दासों** को उनकी आज्ञा मानना आवश्यक था, जो **संसार में तुम्हारे स्वामी हैं,** यानी उनकी जो ''स्वामी स्वर्ग में है'' (6:9) से अलग हैं। **आज्ञा मानों** के लिए यूनानी क्रिया शब्द *hupo* (''अधीन'') और *akouō* (''सुनना'') से बना मिश्रित शब्द *hupakouō* है। ''अधिकतर इसका अर्थ आज्ञा मानना, ध्यान देना, पीछे चलना, अधीन होना है।''[15] ''आज्ञा मानो'' एक क्रियारूप का अनुवाद है जो निरन्तर कार्य का सुझाव देता है, जिस कारण दासों को अपने स्वामियों की आज्ञा निरन्तर **डरते और कांपते हुए** माननी आवश्यक थी। पौलुस (1 कुरिन्थियों 2:3), कुरिन्थियों (2 कुरिन्थियों 7:15) और फिलिप्पियों (फिलिप्पियों 2:12) के लिए ऐसे ही वाक्यांशों का इस्तेमाल होता था।

''डरते'' *phobos* का एक अनुवाद है और पत्नियों के अपने अपने पतियों के आदर (5:33; 1 पतरस 3:2) और नागरिकों के राज्यों के प्रति आदर (रोमियों 13:7) जैसा शब्द है। यहां पर इसका अर्थ ''भक्ति''[16] या ''आदर'' होगा। अपने स्वामियों को सेवकों द्वारा दया जाने वाला आदर ''कांपते हुए'' होना था जो कि *tromos* का अनुवाद है। व्याख्या करने वाले को ''कांपते हुए'' का अर्थ नरम करने का बहुत अधिक प्रयास नहीं करना चाहिए। सेवकों को अपने स्वामियों का आज्ञापालन ''कांपते हुए'' करना आवश्यक था, या जैसा एफ. डी. एस. सैलमण्ड ने कहा है, ''कर्त्तव्य निभाने में *उत्सुक जोश,*'' अर्थात ''उत्सुकता से ध्यान रखना कि कोई कमी न रह जाए।''[17]

अपने मन की सीधाई से आज्ञा मानने के लिए कि प्रेरणा शुद्ध मन से होने की बात है। ''सीधाई'' (*haplotēs*) में मन की ''शुद्धता'' या ''वफ़ादारी'' का विचार पाया जाता है।[18] ''मन'' व्यक्तित्व का केन्द्र होता है जिससे विचार, व्यवहार और कार्य किए जाते हैं। अपने स्वामी के प्रति दास की आज्ञाकारिता के स्रोत के रूप में ''मन'' का शुद्ध और निष्ठा से भरा होना आवश्यक था। दासों का मन ऐसा तब होना था जब उन्हें समझ हो कि अपने स्वामियों के लिए उसकी सेवा **मसीह की** आज्ञा मानना है। मसीही लोग प्रतिदिन के व्यवहार से अलग नहीं थे। अपने सांसारिक कत्तर्व्यों का पालन करते हुए वे मसीह के प्रभु होने का आदर कर रहे थे।

आयत 6. दासों के लिए अच्छी तरह सेवा करना आवश्यक था, चाहे उनके स्वामी उन्हें देख रहे हों या न। उन्हें केवल अपने स्वामियों को ही प्रसन्न नहीं करना था, बल्कि उन्हें परमेश्वर को अर्थात अपने असली स्वामी को प्रसन्न करना था जो गुप्त बातें हों या प्रकट में सब कुछ देखता है। उन्हें **मनुष्यों को प्रसन्न करने वाले** नहीं बल्कि परमेश्वर को प्रसन्न करने वाले बनना आवश्यक था (देखें कुलुस्सियों 3:22)। ईमानदारी से अपने स्वामियों की सेवा करके

दास **परमेश्वर की इच्छा पर** चल रहे थे; और नेक इरादे से उन्होंने **मन से** अर्थात ''अपने पूरे दिल से'' सेवा करनी थी।

आयतें 7, 8. पौलुस ने सेवक के मन पर और समझाया। *Eunoia* के अनुवाद ''अच्छा काम'' का अर्थ ''जोश, जज्बा'' है।[19] दासों को अपने स्वामियों की आज्ञा सकारात्मक रूप में ''डरते और कांपते हुए'' और ''[अपने] मनों की एकाग्रता में'' माननी थी। उन्हें नकारात्मक रूप में भी अर्थात ''दिखाने के लिए नहीं'' (यानी ''न केवल तब जब स्वामी की नज़रों के सामने हों'') बल्कि जोशपूर्ण ढंग से ''इस प्रकार से जैसे किसी की भलाई चाहते हों।''[20] दास जोश के साथ यह समझते हुए आज्ञा मान सकते थे कि उनकी सेवा वास्तव में **प्रभु की** सेवा थी। इसके अलावा पौलुस दासों को समझाना चाहता था कि **जो कोई जैसा अच्छा काम करेगा, चाहे दास हो, चाहे स्वतन्त्र; प्रभु से वैसा ही पाएगा।**

इस प्रकार से अपने स्वामियों की सेवा करने वाले दासों को बेशक अपने स्वामियों से बेहतर व्यवहार मिलना था और इससे उन के जीवन का स्तर ऊंचा होना था। अपने स्वामियों से पहचान मिले या न मिले परन्तु वे इस बात से आश्वस्त हो सकते थे कि प्रभु ने जो सब कुछ देखता है, अन्त में उन्हें उन की आज्ञाकारिता का प्रतिफल देना था। इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने कहा है, ''परमेश्वर अन्यायी नहीं कि तुम्हारे काम को भूल जाए'' (6:10)। परमेश्वर आम तौर पर इस जीवन में आज्ञा मानने के प्रतिफल देता है। पहाड़ी उपदेश में यीशु के कहने का अर्थ था कि जो सही है उसे करने के लिए कुछ प्रतिफल अभी मिल सकते हैं (देखें मत्ती 6:4, 6, 18), जबकि और प्रतिफल अगले जीवन के लिए सुरक्षित हैं। मसीही व्यक्ति को मिलने वाला स्वर्गीय ''प्रतिफल'' मत्ती 5:12, 46 और 1 कुरिन्थियों 3:8, 14 में बताया गया है।

2 कुरिन्थियों 5:10 में प्रेरित ने कहा, ''क्योंकि अवश्य है, कि हम सब का हाल मसीह के न्याय आसन के साम्हने खुल जाए, कि हर एक व्यक्ति अपने-अपने भले बुरे कामों का बदला जो उस ने देह के द्वारा किया हों पाए।'' अपने स्वामियों की आज्ञा मानने वालों को बदला या प्रतिफल परमेश्वर की ओर से इस जीवन में उनकी सेवा के लिए अन्तिम न्याय के समय मिलना था। सब उद्धार पाए हुए लोग परमेश्वर के अनुग्रह से पूर्ण उद्धार पाए हुए हैं। परन्तु न्याय के समय में मसीही व्यक्ति को और प्रतिफल ''जैसे उसने काम किए हैं, उसी के अनुसार'' मिलेगा।

चाहे दास हो चाहे स्वतन्त्र लोगों के साथ व्यवहार करने में परमेश्वर के निष्पक्ष होने को दिखाता है (देखें प्रेरितों 10:34)। पहली सदी के परिवारों में दासों और स्वामियों की स्थिति वैसे की वैसे ही थी परन्तु अन्तिम न्याय के समय यह सामाजिक अन्तर नज़रअन्दाज़ कर दिए जाएंगे। अन्तिम विश्लेषण में जो लोग मसीह में हैं वे बराबर हैं (गलातियों 3:27, 28)।

हे स्वामियो: ''सच्चे दिल से काम करो'' (6:9)

[9]और हे स्वामियो, तुम भी धमकियां छोड़कर उन के साथ वैसा ही व्यवहार करो, क्योंकि जानते हो, कि उन का और तुम्हारा दोनों का स्वामी स्वर्ग में है, और वह किसी का पक्ष नहीं करता।

आयत 9. दासों और स्वामियों से सम्बन्धित निर्देशों के अन्त में पौलुस ने **स्वामियों** की

ज़िम्मेदारी बताई। इस निर्देश के पहले **और** स्वामी और उसकी ज़िम्मेदारी को दास और उसकी ज़िम्मेदारी से जोड़ देता है। **वैसा ही व्यवहार करो** इस तथ्य की ओर ध्यान दिलाता है कि दासों और स्वामियों दोनों को यह समझने की आवश्यकता है कि वे एक ही स्वामी अर्थात प्रभु यीशु मसीह की सेवा कर रहे हैं। यदि स्वामियों को यह समझ होती कि वे भी अपने दासों की तरह मसीह के सेवक हैं और उसे जवाबदेह हैं तो उन्होंने दासों के साथ अपने व्यवहार में अधिक सतर्कता बरतनी थी। स्वामियों को **धमकियां देना छोड़** देने को कहा गया। यदि स्वामियों का अपने दासों के प्रति वैसा ही ''सच्चा हृदय'' (6:7) होता जैसा दासों का अपने स्वामियों के प्रति था तो दोनों को लाभ मिलना था। पहले तो स्वामियों को यह समझ आना था कि उन का एक स्वामी है जिसे वे जवाबदेह हैं। दूसरा उन के बीच सम्बन्ध और मधुर होने थे। तीसरा दासों को जोश भरे आज्ञापालन के साथ सेवा करने के लिए प्रोत्साहन मिलना था।

वह किसी का पक्ष नहीं करता परमेश्वर के सामने सब लोगों के समान होने पर ज़ोर देता है। ''पक्ष'' यूनानी संज्ञा शब्द *prosōpolēmpsia* का अनुवाद है और एक इब्रानी अभिव्यक्ति से निकला है जिसका अर्थ ''पक्षपात दिखाना, मुंह देखकर या बाहरी मामलों के आधार पर न्याय करना है।''[21] स्वामियों का स्वभाव अपने दासों से अपने आपको श्रेष्ठ मानने का था। घरों में चाहे श्रेष्ठता की बात बनी रहनी थी, परन्तु स्वामियों को यह याद दिलाया गया कि परमेश्वर की नज़र में सब बराबर हैं। इसलिए स्वामियों के लिए यह समझना आवश्यक था कि वे अपने दासों के साथ ऐसे व्यवहार करें, जैसे उच्च स्वामी यीशु मसीह के संगी सेवक हों। अपनी ज़िम्मेदारी को निभाकर स्वामियों ने समझदारी से चलना था।

प्रभु में दृढ़ बने रहना (6:10-20)

प्रभु में मज़बूत बनने की ताड़ना के साथ मसीही लोगों को समझदारी से चलने के अपने निर्देश को पौलुस ने परमेश्वर के हथियार पहनने की बात के साथ खत्म किया। इस भाग से 4:1 में आरम्भ हुई तेजस्वी कलीसिया के व्यवहार की उसकी चर्चा समाप्त होती है। इन आयतों को ''परमेश्वर के सारे हथियार'' पहनकर विश्वासियों को ''प्रभु में मज़बूत बनने की ताड़ना'' (6:10-13), मसीही व्यक्ति के हथियारों का विवरण (6:14-17) और प्रार्थना में परमेश्वर पर निर्भरता की आवश्यकता (6:18-20) के तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है।

ताड़ना: ''मज़बूत बनो'' (6:10)

[10]निदान, प्रभु में और उसकी शक्ति के प्रभाव में बलवन्त बनो।

आयत 10. बेशक पौलुस का पत्र कलीसिया के सामने लोगों के बीच में पढ़ा गया था। जब ''निदान'' शब्द पढ़ा गया तो यह कलीसिया के लोगों के लिए अपने वस्त्र इकट्ठे करके घर को जाने की तैयारी करने का समय नहीं था। इसके बाद के निर्देश कलीसिया के बने रहने के लिए महत्वपूर्ण थे। उन्हें पढ़ा जाना, सुना जाना और ईमानदारी से लागू करना आवश्यक था।

निदान (*tou loipou*)[22] यह बताता है कि पौलुस के पत्र में क्या रह गया था। 1 कुरिन्थियों 7:29 और इब्रानियों 10:13 में ''अब से'' का विचार है। पौलुस कह रहा हो सकता है कि इन

भाइयों ने शक्तिशाली शत्रु का सामना किया था और इस समय और भविष्य में भी उन्हें ''प्रभु में मज़बूत बनना'' आवश्यक था।

बलवन्त बनो मसीही लोगों के सामने युद्ध की पौलुस की चर्चा में ले जाता है और हमें उस आज्ञा का स्मरण कराता है, जो परमेश्वर ने कनान के लिए अपने युद्ध के आरम्भ के निकट प्राचीन इस्राएल को दी थी (देखें यहोशू 1:6, 7, 9)। ''बलवन्त बनो'' का अर्थ है कि मसीही लोगों के लिए अपने आपको ''मज़बूत बनाना'' आवश्यक था।[23] मज़बूत बनाया जाना बाहरी स्रोत अर्थात **प्रभु** की ओर से होना था। इस पूरे पत्र में ''मसीह में'' और ''प्रभु में'' वाक्यांश प्रसिद्ध रहे हैं जो इफिसियों को याद दिलाते थे कि वे क्या बन गए थे और कलीसिया के रूप में उनका क्या उद्देश्य है।

वह सामर्थ जो प्रभु की ओर से आनी थी ''[परमेश्वर] की सामर्थ हम में जो विश्वास करते हैं कितनी महान है'' (1:19) और वह सामर्थ जो ''उसके आत्मा से भीतरी मनुष्यत्व में'' दी गई (3:16) का स्मरण कराना था। ''प्रभु में'' सामर्थ के स्रोत और दायरे दोनों से मेल खाता है जिसमें मसीही लोगों को सामर्थ ढूंढ़नी आवश्यक है।

दो शब्द इस सामर्थ का वर्णन कर देते हैं: **शक्ति** और **प्रभाव**। पौलुस द्वारा इस्तेमाल किए गए यूनानी शब्द *kratos* (''शक्ति'') और *ischus* (''प्रभाव'') समानार्थी शब्द हैं। उन का इस्तेमाल परमेश्वर की सामर्थ के विभिन्न पहलुओं का संकेत देने के बजाय मसीही लोगों के लिए उपलब्ध उसकी सामर्थ पर ज़ोर देने के लिए अधिक किया गया है।

निर्देश: ''परमेश्वर के सारे हथियार पहन लो'' (6:11-17)

[11]परमेश्वर के सारे हथियार बान्ध लो; कि तुम शैतान की युक्तियों के साम्हने खड़े रह सको। [12]क्योंकि हमारा यह मल्लयुद्ध, लोहू और मांस से नहीं, परन्तु प्रधानों से और अधिकारों से, और उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में हैं। [13]इसलिए परमेश्वर के सारे हथियार बान्ध लो, कि तुम बुरे दिन में साम्हना कर सको, और सब कुछ पूरा करके स्थिर रह सको। [14]जो सत्य से अपनी कमर कसकर, और धार्मिकता की झिलम पहिन कर। [15]और पांवों में मेल के सुसमाचार की तैयारी के जूते पहिन कर। [16]और उन सब के साथ विश्वास की ढाल लेकर स्थिर रहो जिस से तुम उस दुष्ट के सब जलते हुए तीरों को बुझा सको। [17]और उद्धार का टोप, और आत्मा की तलवार जो परमेश्वर का वचन है, ले लो।

आयतें 11, 12. परमेश्वर की शक्ति और सुरक्षा को रोमी सिपाही द्वारा पहने जाने वाले **हथियार** के अर्थ में दिखाया गया है। मसीही लोगों को प्रभु की शक्ति में मज़बूत बने रहने की आवश्यकता है। क्योंकि हम जीवन और मरन की लड़ाई कर रहे हैं, जिसमें अन्ततः लड़ाई परमेश्वर और शैतान के बीच है। यह युद्ध जीता जा चुका है, जिसका प्रमाण अध्याय 1 से 3 में मिलता है, परन्तु प्रतिदिन के झगड़े लोगों द्वारा ही लड़े जाने आवश्यक हैं। सफल होने के लिए मसीही लोगों को परमेश्वर की सामर्थ पर निर्भर रहना आवश्यक है। मसीही युद्ध का वर्णन करते हुए पौलुस ने रोमी सिपाहियों के पूरी तरह से युद्ध के अस्त्र शस्त्र पहने रोमी सिपाहियों की ओर

संकेत किया। *Panoplia* (''सारे हथियार'') शब्द ''पैदल चलने वाले भारी हथियारों से लैस सिपाही के रक्षात्मक और आक्रामक दोनों प्रकार के सारे हथियारों के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला शब्द'' है।[24]

मसीही व्यक्ति के पास **परमेश्वर के** हथियार हैं क्योंकि इस युद्ध के लिए सामान वही देता है। पौलुस ने घोषणा की, ''क्योंकि हमारी लड़ाई के हथियार शारीरिक नहीं, पर गढ़ों को ढहा देने के लिए परमेश्वर के द्वारा सामर्थी हैं'' (2 कुरिन्थियों 10:4)।

मसीही व्यक्ति के लिए ''परमेश्वर के सारे हथियार'' पहनने का कारण यह है कि **तुम शैतान की युक्तियों के सामने खड़े हो सको**। आयतें 13 और 16 में परमेश्वर की सामर्थ के सम्बन्ध में जो विश्वासियों को ''स्थिर'' (*histēmi*) रह सकने के योग्य बनाती है और उसने ''सको'' (*dunamai*) शब्द का इस्तेमाल किया। ''अपनी बात में बने रहने, सामना करने, विरोध के आगे न झुककर इसमें स्थिर रहने'' का संकेत देने के लिए 13 और 14 आयतों में भी स्थिर रहने का विचार मिलता है।[25]

मसीही लोगों को किसके सामने स्थिर रहना है? **शैतान** (*diabolos*) **के**। (देखें ''और अध्ययन के लिए: हमारा विरोधी शैतान।'') आयत 12 में पौलुस ने इस शत्रु का विवरण किया: **क्योंकि हमारा यह मल्लयुद्ध, लोहू और मांस से नहीं, परन्तु प्रधानों से और अधिकारों से, और उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है, जो आकाश में हैं** (देखें 1:20; 3:10)। मसीही लोग आत्मिक क्षेत्र में हर प्रकार की बुराई का सामना करते हैं जिसे शैतान मसीह के सुसमाचार के काम के विरुद्ध चलाता है। युद्ध को ध्यान में रखते हुए मसीही व्यक्ति को यदि जय पानी है तो उसे परमेश्वर के हथियार लेने आवश्यक हैं।

शैतान **युक्तियों** (*methodeia*) से लैस है, यानी विश्वासियों को दृढ़ता से खड़े रहने से डिगाने के लिए वह ''चालाकियां'' या ''चालें''[26] इस्तेमाल करता है। इस शब्द का बहुवचन रूप यह सुझाव देता है कि लोगों पर आक्रमण करने के शैतान के पास कई तरीके हैं। पौलुस ने तीमुथियुस को ''शैतान के फंदे'' में फंसने के विरुद्ध चेतावनी दी (1 तीमुथियुस 3:7; 2 तीमुथियुस 2:26)।

पौलुस ने बुराई की शक्तियों को ''मसीह द्वारा पराजित कर दिए जाने के बावजूद विश्वासियों के जीवनों में रास्ते बनाने की कोशिश करते और उनके अन्त में झुकने से पहले सुसमाचार को बढ़ने से रोकने के प्रयास करते हुए'' देखा।[27] अन्य शब्दों में शैतान को मालूम है कि वह हार चुका है पर फिर भी वह जितनी आत्माओं पर फिर से दावा कर सके, उन पर दावा करने की कोशिश करता रहता है। हर व्यक्ति जो जवाबदेही की उम्र तक पहुंच चुका है कभी बुराई की शक्ति के वश में था (2:1-3); परन्तु मसीही लोगों को मसीह के द्वारा परमेश्वर के काम को स्वीकार करने के द्वारा स्वतन्त्र कर दिया गया है (2:4-22)। मसीही सिपाहियों के रूप में विजय के लिए कोशिश करने का काम, पराजित हो चुके परन्तु अभी भी शक्तिशाली शत्रु के विरुद्ध स्थिर रहने का काम है।

अनुवादित शब्द ''मल्लयुद्ध'' (*palē*) आम तौर पर ''*कुश्ती* के रूप में मुकाबला'' की तस्वीर दिखाता है।[28] यदि पौलुस का इरादा यह था तो लगता है कि वह अपने अलंकार को बदलकर सिपाही से पहलवान में ले गया; परन्तु प्राचीन समयों में इस शब्द का इस्तेमाल ''किसी

भी प्रकार के मुकाबले या युद्ध के लिए'' किया जा सकता था।[29] पौलुस ने यह संकेत देने के लिए कि मसीही व्यक्ति की लड़ाई शत्रु के साथ बहुत निकटता से होती है अपनी शब्दावली को बदल दिया हो सकता है।

यह अदृश्य परन्तु बहुत ही वास्तविक शत्रु है जो ''दुष्टता की आत्मिक सेनाएं जो आकाश में हैं'' शक्तिशाली है।[30] उसके क्षेत्र को ''अंधकार का वश'' कहा गया है (कुलुस्सियों 1:13)। आत्माओं को धोखा देने और कब्जा करने के लिए वह झूठे सेवकों, भ्रमित करने, धोखा देने वाली शिक्षाओं और आराधना के स्थानों का इस्तेमाल करता है।[31] पौलुस का मिशन लोगों को ''शैतान के अधिकार से परमेश्वर की ओर'' लाना था (प्रेरितों 26:18)। मसीही लोगों के लिए ऐसी सेना से भिड़ने और उसे जीतने के लिए परमेश्वर की सहायता का होना आवश्यक है।

आयत 13. परमेश्वर के सारे हथियार बान्ध लो। अनुवादित क्रिया रूप ''बांध लो'' संकेत देता है कि इस आज्ञा को एक ही बार माना जाना है। मसीही सिपाहियों को ''परमेश्वर के सारे हथियार'' लेना और आगे बढ़ते रहना है।

फिर उसने कहा, **कि तुम बुरे दिन में साम्हना कर सको**। ''बुरे दिन में'' शब्द बुराई के आने की बात थी। कुछ व्याख्या करने वालों का मानना है कि मसीह के द्वितीय आगमन से थोड़ा पहले बुराई बहुत बड़ जाएगी। शायद ऐसा हो भी परन्तु 5:16 में पौलुस ने उस समय की बात की जिसमें इफिसुस के लोग बुरे दिनों में रह रहे थे। इसलिए पौलुस केवल इतना कह रहा होगा कि उन्हें वर्तमान में और भविष्य में बुरे दिनों का सामना करते हुए परीक्षाओं का सामना करने के लिए अपने आपको तैयार रखने के लिए परमेश्वर के हथियार पहनने आवश्यक हैं।

''सामना'' का अनुवाद *anthistēmi* का एक अनुवाद है जिसका अर्थ है ''अपने आप को के विरुद्ध रखना ... विरोध करना, मुकाबला करना।''[32] विचार यह है कि उन्हें लड़ाई में सफल होना था, जैसा कि आयत के अन्तिम भाग में कहा गया है। **पूरा करके** ''सम्पादन करना, पूरा करना, प्राप्त करना, वह करना जिससे कुछ परिणाम मिले, किसी चीज़ को इसके अन्तिम मुकाम तक पहुंचाना'' का अर्थ देता है।[33] मसीही सिपाहियों के लिए परमेश्वर के हथियार पहनना आवश्यक है, ताकि वे परमेश्वर द्वारा दिए गए हथियार पहनकर यह सुनिश्चित हो सकें कि **सब कुछ स्थिर रह** सकने के लिए और विजय पाने के लिए किया गया है।

आयत 14. पौलुस ने फिर **स्थिर रहने** की ताड़ना दी (देखें 6:11, 13)। यह ऐसा वाक्यांश है जिसका इस्तेमाल उसने अपने अन्य लेखों में आम तौर पर किया। उसने देखा कि कुरिन्थुस की कलीसिया सुसमाचार में स्थिर बनी, और उसने भाइयों से ''विश्वास में स्थिर रहने'' का आग्रह किया (1 कुरिन्थियों 15:1; 16:13)। रोमियों के नाम लिखते हुए उसने ''अनुग्रह ... जिसमें हम बने हैं'' की बात की और कहा कि वे ''विश्वास से'' स्थिर थे (रोमियों 5:2; 11:20)। पौलुस ने फिलिप्पियों को यकीन दिलाया कि वे ''एक ही आत्मा में स्थिर'' थे और उन्हें ''प्रभु में स्थिर'' रहने को कहा (फिलिप्पियों 1:27; 4:1)। उसके मित्र इपफ्रास ने प्रार्थना की कि कुलुस्से के लोग ''सिद्ध होकर पूरे विश्वास के साथ परमेश्वर की इच्छा पर स्थिर'' रहें (कुलुस्सियों 4:12)।[34] हमारे सामने जो वचन है उसमें पौलुस ने दिखाया कि परमेश्वर के सारे हथियार पहनने से इफिसियों ने ''स्थिर रह'' सकना था।

सत्य से अपनी कमर कसकर से निश्चय इफिसियों के ध्यान में पहने जाने वाले हथियारों

की बात आ गई होगी। पौलुस इफिसियों के नाम पत्र लिखते समय रोम में नज़रबन्द था जिस कारण वह रोज़ सिपाहियों को देखता होगा। वे उसे बड़े आत्मिक युद्ध में मसीही व्यक्ति के हथियारों से लैस होने की आवश्यकता को याद दिलाते होंगे।

बुराई की आत्मिक शक्तियों के साथ लड़ाई लोगों के मनों की है। पौलुस ने कुरिन्थियों को सही सोच का महत्व समझाया, जब उसने लिखा:

> क्योंकि यद्यपि हम शरीर में चलते फिरते हैं, तौभी शरीर के अनुसार नहीं लड़ते। क्योंकि हमारी लड़ाई के हथियार शारीरिक नहीं, पर गढ़ों को ढा देने के लिए परमेश्वर के द्वारा सामर्थी हैं। सो हम कल्पनाओं को, और हर एक ऊंची बात को जो परमेश्वर की पहिचान के विरोध में उठती है, खण्डन करते हैं; और हर एक भावना को कैद करके मसीह का आज्ञाकारी बना देते हैं (2 कुरिन्थियों 10:3-5)।

यदि शैतान हमारी सोच को अपनी सोच में ढाल सकता है तो हम लड़ाई हार गए। हमें नहीं भूलना चाहिए कि शैतान चालाक है और हमारी सोच की प्रक्रियाओं को प्रभावित करने के लिए वह विभिन्न ढंगों का इस्तेमाल कर सकता है। शैतान के हाथों में विचारधारा एक ज़बर्दस्त हथियार है। हैरानी की बात नहीं कि पतरस ने कहा ''अपनी अपनी बुद्धि[35] की कमर बांध'' लो (1 पतरस 1:13)।

''कमर'' (*osphun*) कंधों के नीचे कूल्हे और जांघों के ऊपर के भाग को कहा गया है। ''बांध'' लो (*perizōnnumi*) का अर्थ अपने वस्त्र को ''कमरबंद या बैल्ट'' से बांधना है।[36] मसीही सिपाही के लिए यह काम बुराई के विरुद्ध सही ढंग से खड़ा होने से पहले परमेश्वर की सहायता से करना आवश्यक था। रोमी सिपाही के जीवन में बैल्ट या पेटी का बड़ा ही महत्व था। कमर को कसने से वह गतिविधि के लिए तैयार होने के योग्य हो जाता था (देखें लूका 12:35, 37)।

कमरबंद, जिससे दूसरा सामान इकट्ठा रहता था और सिपाही को काम के लिए तैयार करता था, ''सत्य'' को दिखाता है। वास्तविक अर्थ में ''सत्य'' परमेश्वर का वचन है (यूहन्ना 17:17)। इफिसियों में सुसमाचार को सत्य कहा गया है (देखें 4:21)। यह ''सत्य'' लोगों को मुक्त करता है (यूहन्ना 8:32), इसे सुना जाना, प्रेम किया जाना विश्वास किया जाना, बचाव किया जाना और माना जाना आवश्यक है।[37] इस सत्य के बिना मसीही सिपाही लड़ाई के लिए तैयार नहीं हैं।

परमेश्वर के हथियार के संदर्भ में पौलुस ने यशायाह 11:5 में से उद्धृत किया, जहां आने वाले मसीहा के ''सत्य'' को धर्म और सच्चाई का पेटा कहा गया है।[38] आयतें 14 से 17 में कई आकृतियां पुराने नियम से ली गई हैं। इसलिए इस वचन में अंग्रेज़ी बाइबली NASB में कुछ शब्द छोटे कैपिटल अक्षरों में दिए गए हैं।

कमरबंद ''*निष्कपटता, ईमानदारी, सच्चाई* के व्यक्तिगत अनुग्रह'' को दर्शाता है, ''... क्योंकि इसका इस्तेमाल परमेश्वर की यथार्थता के लिए भी किया जाता है (रोमियों 15:8)।''[39]

... *स्पष्टवादिता, सच्चाई, वास्तविकता* का यह स्पष्ट अनुग्रह अर्थात यह सोच जो परमेश्वर

के साथ हमारे सम्पर्क में कोई छल नहीं बरतेगी और कोई बहाना बनाने की कोशिश नहीं करेगी, मसीही सुरक्षा के लिए सचमुच में महत्वपूर्ण है और चरित्र के अन्य सभी गुणों के सही कार्य के लिए आवश्यक है।[40]

मसीही योद्धा को परमेश्वर के वचन की सच्चाई और व्यक्तिगत वफ़ादारी और ईमानदारी के साथ कमर कसनी आवश्यक है।

धार्मिकता की झिलम पहनकर से इफिसियों को सिपाही के हथियार वाले उस भाग का स्मरण कराया गया, जो उसके हृदय और अन्य महत्वपूर्ण अंगों की रक्षा करता है। मसीही व्यक्ति के हृदय की रक्षा ''धार्मिकता'' से होती है। योद्धा के कमरबंद की बात करते हुए मसीहा की यशायाह की तस्वीर दिखाकर पौलुस ने यहां पर प्रभु के यशायाह के विवरण को ''धर्म की झिलम के समान पहन'' लेने के रूप में इस्तेमाल किया (यशायाह 59:17)। तीन समानान्तर बातें मसीहा की ''धार्मिकता'' को उसकी ''सच्चाई'' के रूप में दिखाती हैं। परमेश्वर की ''धार्मिकता'' के लिए इब्रानी शब्द और यशायाह में मसीहा के पदों का अर्थ नैतिक अर्थ में ''न्याय'' है।[41]

नये नियम में ''धार्मिकता'' का सम्बन्ध मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ हमारे सम्बन्ध से है। ''जब तुम पाप के दास थे तो परमेश्वर की ओर से स्वतन्त्र किए गए'' (रोमियों 6:20)। यह लिखने का अर्थ था कि पापी व्यक्ति का परमेश्वर के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है क्योंकि उसका पाप उसे परमेश्वर से अलग कर देता है (देखें यशायाह 59:1, 2)। मसीह हमारा ''धर्म'' (1 कुरिन्थियों 1:30) इस बात में है कि परमेश्वर ने ''जो पाप से अज्ञात था, उसी को उस ने हमारे लिए पाप ठहराया कि हम उस में होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं'' (2 कुरिन्थियों 5:21)। जब कोई मसीह में बपतिस्मा लेता है तो वह मसीह को पहन लेता है (गलातियों 3:27) और धार्मिकता का दास बन जाता है (रोमियों 6:18)। यह वही ''धार्मिकता'' है जो सुसमाचार में बताई गई है जिसे आज्ञाकारी विश्वास के द्वारा ग्रहण किया जाना आवश्यक है (रोमियों 1:5, 16, 17)। अब्राहम को परमेश्वर द्वारा धर्मी ठहराया जाना आज्ञाकारी विश्वास के द्वारा हुआ था (रोमियों 4:22)। जब कोई व्यक्ति आज्ञाकारी विश्वास से मसीह की बात मान लेता है तो उसे परमेश्वर की ओर से धार्मिकता के रूप में देखा जाएगा (रोमियों 4:23, 24)। ''धार्मिकता'' या धर्म का अर्थ परमेश्वर के साथ सही सम्बन्ध होना है।

''धार्मिकता की झिलम'' उन लोगों के लिए है जिनके पाप पहले ही क्षमा हो चुके हैं और परमेश्वर के साथ उनका सम्बन्ध सही हो चुका है। इसलिए मसीही व्यक्ति के हथियार के रूप में पौलुस द्वारा बताई गई ''धार्मिकता'' यह स्मरण कराने के लिए है कि परमेश्वर और मसीहा न्याय करने में ''धर्मी'' या सच्चे हैं। सही काम करना या न्याय से काम करने का गुण मसीही योद्धा के हथियार का महत्वपूर्ण भाग है।

आयत 15. फिर पौलुस ने कहा, **पांवों में मेल के सुसमाचार की तैयारी के जूते पहिन कर**। इस बात की गूंज यशायाह 52:7 में मिलती है जिसमें कहा गया है ''उसके पांव जो शुभ समाचार लाता है, जो शान्ति की बातें सुनाता है और कल्याण का शुभ समाचार और संदेश देता है।'' रोमियों के नाम अपने पत्र में पौलुस ने सुसमाचार के सुनाने वाले के सम्बन्ध में यह आयत दोहराई (रोमियों 10:15)। परन्तु यहां पर पौलुस ने पांवों को प्रचार के बजाय तैयारी के साथ

जोड़ दिया।

सिपाही को युद्ध में सफल होने के लिए सही जूते होने आवश्यक होते थे। ''पहन'' का अनुवाद *hupodeō* से किया गया है और इसका मूल अर्थ है, ''नीचे बांधना, जैसे पांवों के नीचे सैंडल, जिसका अर्थ सैंडल पहनना है।''[42] रोमी सिपाही चमड़े की पतली पट्टियों से अपने पांवों और टांगों से अपने सैंडलों के चमड़े के तले बांधता था। जोसेफ़स ने यरूशलेम में एक रोमी सिपाही के बारे में बताया, जिसके ''जूते मोटी और तीखी कीलों से भरे थे जैसे दूसरे हर सिपाही के होते थे।''[43] कीलों से सिपाही को युद्ध में पैर जमाकर रखने में सहायता मिलती थी।

पौलुस की बात का ज़ोर हो सकता है कि उतना स्थिर रहने पर न हो (आयतें 11 और 13 में पहले से बता दी गई अवधारणा) जितना ''तैयारी'' पर है। उसके द्वारा इस्तेमाल किया गया शब्द *hetoimasia* एक यूनानी संज्ञा शब्द है जिसका अर्थ है ''तैयारी, तत्परता।''[44] मसीही योद्धा की ''तैयारी'' ''शान्ति के सुसमाचार'' से निकली है। इस पत्री में पहले पौलुस ने दिखाया था कि मसीह ''हमारा मेल है'' (2:14)। उसने यहूदियों और अन्यजातियों के बीच सुलह करवाई और यहूदियों और अन्यजातियों दोनों को परमेश्वर मिल गया (2:15, 16)। क्रूस पर बहे अपने लहू के द्वारा यह मेल करवाने के बाद मसीह ने सब में मेल का प्रचार किया (2:17)। सुसमाचार शान्ति या मेल का संदेश है। मसीही सिपाही शैतान के हर हमले का सामना करने के लिए तैयार रह सकता है क्योंकि ''मेल का सुसमाचार'' उसे ऐसा करने के लिए तैयार करता है। परमेश्वर से और साथी मसीही के योद्धाओं को दृढ़ता से शत्रु का सामना करने को प्रेरित करता है।

आयत 16. इन सब के साथ मूल में ''सब में'' है। इस अभिव्यक्ति का अर्थ ''हर परिस्थिति में'' हो सकता है पर क्योंकि संदर्भ मसीही व्यक्ति के हथियारों की बात करता है इसलिए सम्भवतया इसका अर्थ ''इन सब [शेष हथियारों] के साथ'' लेना सही है।

फिर **विश्वास की ढाल लेकर** बताया गया है। ''ढाल'' (*thureos*) ''पैदल सिपाही की भारी ढाल, बड़ी, आयताकार, चार बाई अढाई फुट, कई बार अन्दर की ओर खुली हुई'' को कहा गया है।[45] ऐसी ढाल सिपाही के पूरे शरीर की रक्षा करने के लिए बनाई गई होती थी। मसीही व्यक्ति की ढाल ''विश्वास'' है जो इफिसियों की पूरी पुस्तक में मिलने वाली अवधारणा है (1:13, 15; 2:8; 3:12, 17; 4:5, 13; 6:23)। सच्चा विश्वास सुसमाचार की सच्चाई पर यकीन करना, परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं और सामर्थ में भरोसा करने और प्रभु की आज्ञाओं को मानना है। विश्वास का यह स्तर मसीही व्यक्ति के पूरे अस्तित्व की रक्षा करता है, क्योंकि यह उस ''शत्रु की ओर से फैंके जाने वाले बुराई के किसी भी हमले के बीच परमेश्वर के संसाधनों को पकड़े रखकर मज़बूत बताता है।''[46]

मसीही व्यक्ति के लिए **उस दुष्ट के सब जलते हुए तीरों को बुझा** सकने के लिए ''विश्वास की ढाल'' का इस्तेमाल करना आवश्यक है। ''जलते हुए तीरों'' अवश्य ही ''[सिरे पर तारकोल] लगे तीर, राल या ऐसी सामग्री को छोड़े जाने से पहले उन पर लगी आग'' को कहा गया हो सकता है।[47] सिपाही की ढाल जो लकड़ी की बनी होती थी और कई बार पानी में भिगोए चमड़े से ढकी होती थी,[48] शत्रु के ''जलते हुए तीरों'' को रोकने के लिए प्रभावी रोक थी। मसीही व्यक्ति की ''विश्वास की ढाल'' झूठी शिक्षा, सताव, परीक्षा, चिंता और भय सहित बुराई के हर ''जलते हुए तीरों'' को रोकने में सक्षम है।

''उस दुष्ट'' वाक्यांश में यूनानी धर्मशास्त्र में ''उस'' नहीं मिलता है। यह बिल्कुल यह स्पष्ट करने के लिए कि शैतान हर बुराई का कर्त्ता अनुवाद में जोड़ा गया (तुलना इफिसियों 6:12 और मत्ती 6:13)। शैतान ने मसीही लोगों पर एक शक्तिशाली और निरन्तर प्रहार किया है, परन्तु ''विश्वास की ढाल'' हमें इससे बचने और विजयी होने में सहायक होगी। यूहन्ना ने कहा, ''और वह विजय जिससे संसार पर जय प्राप्त होती है हमारा विश्वास है'' (1 यूहन्ना 5:4)।

पौलुस का ज़ोर अन्य युगों में परमेश्वर के लोगों के विश्वास पर था, जैसे कि इब्रानियों 11:33, 34 वाले लोग:

> इन्होंने विश्वास ही के द्वारा राज्य जीते; धर्म के काम किए; प्रतिज्ञा की हुई वस्तुएं प्राप्त कीं, सिंहों के मुंह बन्द किए। आग की ज्वाला को ठंडा किया; तलवार की धार से बच निकले, निर्बलता में बलवन्त हुए; लड़ाई में वीर निकले; विदेशियों की फौजों को मार भगाया।

वर्तमान युग में, ऐसी ही विजय पाई गई हैं और पाई जाएंगी।

आयत 17. मसीही व्यक्ति के हथियारों को पहनने का अगला कदम **उद्धार का टोप** लेना है। फिर से, ये शब्द यशायाह 59:17 से लिए गए हैं। रोमी सिपाही का टोप शत्रु के तीरों से उसके सिर का बचाव करता था। बेहतरीन स्थिति में इन्हें मोड़ा जा सकता था और बदतर स्थिति में वे घातक हो सकते थे। मसीही व्यक्ति को संदेह और निराशा के विनाशकारी प्रहारों से जिन्हें शत्रु उसे उलझाने या उसकी आत्मिक मृत्यु का कारण बनने के लिए इस्तेमाल कर सकता था, अपने मन को बचाने की आवश्यकता है। ''ले लो'' (*dechomai*) सुझाव देता है कि दी गई आज्ञा आज्ञापालन की बात कर रही थी ''जो उसी पल आरम्भ होनी आवश्यक थी।''[49] मध्य स्वर ''कर्त्ता को अपने ऊपर या अपने सम्बन्ध में किसी प्रकार कार्य करते हुए दिखाता है।''[50] अन्य शब्दों में मसीही व्यक्ति के अपने बचाव के लिए उसे किसी दूसरे द्वारा प्रस्तुत किया गया कार्य उसी समय किया जाना आवश्यक था। पेशकश उद्धार की गई है और पेशकश करने वाला इसे परमेश्वर के अनुग्रह के दान के रूप में पेश करता है।

इसलिए ''उद्धार'' इफिसियों के पास वर्तमान में होने की बात है। उनका उद्धार परमेश्वर की पहल, मसीह की मृत्यु और इफिसियों के उसे स्वीकार करने के द्वारा *कालांतर* में हुआ था (देखें 2:1-22)। यह *वर्तमान* में जारी था क्योंकि उस पल में वे ''पवित्र लोग'' और ''मसीह यीशु में विश्वासी'' थे (1:1)। वे ''अब मसीह यीशु में'' (2:13), ''पवित्र लोगों के संगी स्वदेशी और परमेश्वर के घराने के'' थे (2:19)। उद्धार के *भविष्य* में होने वाले प्रभाव थे। थिस्सलुनीके के लोगों को पौलुस ने बताया कि उन्हें ''उद्धार की आशा का टोप'' पहनना था (1 थिस्सलुनीकियों 5:8)। स्वर्ग में होने वाला अन्तिम उद्धार अभी भविष्य में था, जिसकी इन मसीही लोगों को आशा थी।

इफिसियों के परमेश्वर की ओर से उद्धार को पाने के अतीत, वर्तमान और भविष्य के पहलुओं ने उनके मन को दोषपूर्ण सोच से बचाना था। उन्हें यकीन था कि उनका उद्धार अतीत में हुआ था, उनका उद्धार वर्तमान में हुआ था और अन्त में उनका उद्धार स्वर्ग में होना था। इस आश्वासन को मसीही व्यक्ति के आत्मिक युद्ध में लगे होने पर उसके सिर की रक्षा के लिए उद्धार के टोप के रूप में दिखाया गया है।

मसीही कवच में आक्रमण का एकमात्र हथियार **आत्मा की तलवार जो परमेश्वर का वचन है**। ''तलवार'' *machaira* का अनुवाद है जो रोमी सिपाही द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली ''लम्बी और चौड़ी तलवार''[51] के विपरीत तीखी छोटी तलवार होती थी। छोटी तलवार का इस्तेमाल जल्दी-जल्दी चलाने और शत्रु के तीरों के हमलों से बचने के लिए किया जाता था। मसीही सिपाही को अपने इलाके के बचाव में न केवल अपनी ज़मीन पर खड़े रहना है, बल्कि उसे ''आत्मा की तलवार जो परमेश्वर का वचन है'' लेकर मसीह के काम के लिए आगे बढ़ना आवश्यक है।

''परमेश्वर का वचन'' को ''आत्मा की तलवार'' कहा गया है, क्योंकि आत्मा ने इसे मनुष्य को दिया है (देखें 3:1-10; यूहन्ना 16:13)। आत्मा ने वचन को ऊर्जावान किया और इसे प्राण और सामर्थ दी (देखें 2 कुरिन्थियों 3:6; 1 थिस्सलुनीकियों 1:5; इब्रानियों 4:12)। ''वचन'' के लिए पौलुस द्वारा इस्तेमाल किया गया शब्द *rhēma,* है जिसका ''बोला गया शब्द''[52] जो सुसमाचार के सुनाए जाने की बात करता है। ''सुनाया गया सुसमाचार है, जिसका 'परमेश्वर की सामर्थ' [रोमियों 1:16; 1 कुरिन्थियों 1:18] हमले की मार को झेलने और उलटा उसे मारने के लिए आत्मा द्वारा दिया गया हथियार है।''[53]

सुसमाचार ''सत्य का वचन'' (1:13) और ''मेल का सुसमाचार'' (6:15) है। यह सत्य हर प्रकार की बुराई को सामने लाकर परमेश्वर के शत्रुओं को भगा सकता है। यह सत्य परमेश्वर से मेल, दूसरों के साथ मेल, मसीही व्यक्ति का अपने साथ मेल कराता है (2:13-18)। जब मसीही सिपाही विरोधी पर जय पाते हुए और बंदियों को छुड़ाते हुए और मसीह के नाम में आगे बढ़ते हैं तो संसार में परमेश्वर के उद्देश्य को आगे बढ़ाते हैं।

याचना: ''प्रार्थना करो और चौकस रहो'' (6:18-20)

[18]और हर समय और हर प्रकार से आत्मा में प्रार्थना, और बिनती करते रहो, और इसी लिए जागते रहो, कि सब पवित्र लोगों के लिए लगातार बिनती किया करो। [19]और मेरे लिए भी, कि मुझ बोलने के समय ऐसा प्रबल वचन दिया जाए, कि मैं हियाव से सुसमाचार का भेद बता सकूं जिस के लिए मैं जंजीर से जकड़ा हुआ राजदूत हूं।

[20]और यह भी कि मैं उस के विषय में जैसा मुझे चाहिए हियाव से बोलूं।

आयत 18. कुछ टीकाकारों का मानना है कि प्रार्थना मसीही व्यक्ति का अन्तिम हथियार है जबकि अन्यों का मानना है कि पौलुस ने आयत 17 में सैनिक रूपकों को प्रार्थना पर ज़ोर देने के लिए छोड़ दिया। जिस भी विचार को माना जाए, सब इस बात से सहमत हैं कि प्राचीन सिपाही अपने सपोर्ट सिस्टम से सम्प्रेषण और सप्लाई लाइन के बिना नहीं रह सकता था। यही बात मसीही सिपाही पर लागू होती है। जब तक परमेश्वर के साथ खुला सम्प्रेषण नहीं है और जब तक परमेश्वर आवश्यक सामर्थ देना जारी नहीं रखता, वह सफल नहीं हो सकता।

अनुवाद हुए कृदंत ''प्रार्थना'' और ''जागते रहो'' को सिपाही के हथियारों के पौलुस के विवरण के आरम्भ में ''स्थिर रहो'' के साथ जोड़ा जा सकता है। आत्मिक युद्ध में मसीही लोगों को विजय पाने के लिए परमेश्वर की आत्मिक सहायता की आवश्यकता है। ''परमेश्वर के

सारे हथियार बांध'' (6:13) लेने पर मसीही लोगों को परमेश्वर की सामर्थ पर भी निर्भर रहना आवश्यक है, जो प्रार्थना के द्वारा मिलती है।

पौलुस ने **प्रार्थना** के लिए दो शब्दों का इस्तेमाल किया। पहला इस्तेमाल *proseuchē* परमेश्वर से बातें करने, और धन्यवाद देने और विनतियां करने सहित अपने सभी रूपों में ''प्रार्थना'' के लिए सामान्य शब्द है। दूसरा *deēsis,* जिसका अर्थ **विनती** है, ''विशेष लाभों के लिए विनती'' है।[54] पौलुस ने **हर समय** प्रार्थना की आवश्यकता के विचार को गम्भीर बनाने के लिए दोनों शब्दों का इस्तेमाल किया।[55] प्रार्थना मसीही व्यक्ति के जीने के लिए परमेश्वर की शक्ति और सामर्थ मांगने का माध्यम है (1:15-23; 3:14-21)।

आत्मा में पवित्र आत्मा को कहा गया है। यहूदा बिल्कुल स्पष्ट था जब उसने अपने पाठकों से कहा कि ''पवित्र आत्मा में प्रार्थना करते'' रहें (यहूदा 20)। इफिसियों के पूरे पत्र में पौलुस ने पवित्र आत्मा की बात की। उन्हें आत्मा से मोहर किया गया था, आत्मा से परमेश्वर तक उनकी पहुंच थी, आत्मा के द्वारा वे परमेश्वर का वास स्थान थे। आत्मा के द्वारा उन्हें सामर्थ दी गई थी, उन्हें आत्मा को शोकित नहीं करना था और उन्हें आत्मा से परिपूर्ण होना था (1:13; 2:18, 22; 3:16; 4:30; 5:18)। पत्र के अन्त के निकट आते हुए पौलुस ने इफिसियों को ''आत्मा में प्रार्थना'' करने को कहा।

आत्मा मसीही लोगों के प्रार्थनाओं करने में गहराई से जुड़ा हुआ है। परमेश्वर के आत्मा ने उनके मनों में आकर उन्हें ''हे अब्बा, हे पिता'' पुकारने के योग्य बनाया है (रोमियों 8:15; गलातियों 4:6)। आत्मा मसीही लोगों के लिए निवेदन करता है जो अपनी निर्बलताओं के कारण नहीं जानते कि प्रार्थना कैसे करनी है। रोमियों 8 मसीही लोगों की निर्बलताओं और कराहने की बात करता है। कष्ट के समय में आम तौर पर प्रार्थना को शब्दों में नहीं ढाला जा सकता है। परमेश्वर की संतान केवल इतना पुकार सकते हैं, ''हे परमेश्वर, हमारी सहायता कर!'' जब उनका कराहना इतना अधिक हो कि मुंह से आवाज़ न निकले तब आत्मा निवेदन करता है यानी वह परमेश्वर के सामने मसीही व्यक्ति की ओर से विनती के लिए खड़ा होता है। आत्मा के निवेदन के द्वारा परमेश्वर इन अनकही प्रार्थनाओं को गलत नहीं समझेगा। ''आत्मा में'' प्रार्थना करने का अर्थ प्रार्थना के बारे में आत्मा द्वारा वचन के द्वारा प्रकट की गई बातों को जानना और प्रार्थना करने में आत्मा की सहायता को समझना है।

आम तौर पर प्रार्थना करते रहने के अलावा इफिसियों को **सब पवित्र लोगों** की आवश्यकताओं का ध्यान रखना और उनके लिए **विनती** (*deēsis*) करना आवश्यक था। **और इसी लिए जागते रहो** का अनुवाद *agrupneō* और *proskarterēsis* से किया गया है जिसका अर्थ ''ध्यान रखना, खबरदार रहना'' और ''किसी चीज़ पर लगातार ध्यान देना'' है।[56] यहां पर पवित्र लोगों के लिए प्रार्थना के लिए ''लगातार ध्यान देना'' आवश्यक था।

आयत 19. फिर पौलुस ने व्यक्तिगत विनती की। पौलुस चाहता था कि इफिसी लोग अपने लिए, सब पवित्र लोगों के लिए और उसके लिए **प्रार्थना** करें। उसकी इच्छा थी कि वे उसके **लिए** प्रार्थना करें। वह चाहता था कि वे प्रार्थना करें कि परमेश्वर उसे न केवल संदेश दे बल्कि **हियाव** से संदेश को सुनाने के लिए बोल या शब्द भी दे। ''हियाव'' जिसे पौलुस चाहता था वह *parrēsia* का अनुवाद है, जो कि ''बोलने में खरापन, सर्वता स्पष्टता'' है।[57] ''हियाव,''

''लज्जित'' होने[58] के उलट है (देखें फिलिप्पियों 1:20)। **बोलने के समय** परमेश्वर के वचन को सुनाने के लिए बाइबल की एक अभिव्यक्ति है (देखें येहजकेल 3:27; 33:22; दानिय्येल 10:16)।

आयत 20. पौलुस **ज़ंजीर से जकड़ा हुआ** था यानी वह एक कैदी था (देखें 3:1; 4:1; प्रेरितों 28:20; 2 तीमुथियुस 1:16)। इसके साथ ही उसने कहा कि वह **राजदूत** (*presbeuō*) है, जो 2 कुरिन्थियों 5:20 में भी इस्तेमाल किया गया शब्द है। राजदूत उसे कहा जाता था जो किसी विदेशी भूमि पर अपनी सरकार का प्रतिनिधित्व करता हो, जो अपनी सरकार के अधिकार से बात करता हो और जिसके हाथ में अपनी सरकार की प्रतिष्ठा हो। इसके अलावा वह अपने घर से दूर भी रहता था। इन सब बातों में पौलुस नये नियम के सारे संसार में स्वर्ग का राजदूत था। उसने इस बात को समझा कि उसकी नागरिकता किसी दूसरे संसार की है (देखें फिलिप्पियों 3:20, 21) और उसे मसीह द्वारा इस संसार में अपना प्रतिनिधित्व करने के लिए चुना गया है (देखें प्रेरितों 26:15-18)। मसीह का राजदूत होने के कारण वह मसीह के सारे अधिकार से बात करता था (देखें 1 कुरिन्थियों 14:37) और जानता था कि मसीह की प्रतिष्ठा उसके हाथ है (देखें फिलिप्पियों 3:12-21)। पौलुस के ''ज़ंजीरों में राजदूत'' होने पर टिप्पणी करते हुए लिंकोन का मूल्यांकन है:

> ज़ंजीरों में राजदूत की बात करना एक विरोधाभास को लागू करना है। आम तौर पर राजदूत को राजनैतिक प्रतिरक्षा मिली होती थी और उसे उन लोगों द्वारा जिनके पास उसे भेजा गया हो कैद नहीं किया जा सकता था, परन्तु अब सुसमाचार का प्रतिनिधित्व करने के लिए ज़ंजीरें उपयुक्त पहचान बन गई, जो कि दुख सह रहे प्रेरित की पहचान हैं।[59]

इफिसुस की कलीसिया को समझदारी से चलना था (5:15-6:20)। ऐसा ध्यान से चलने (5:15-21), सम्मानपूर्वक सम्बधों (5:22-6:9) और प्रभु में दृढ़ बने रहकर ही हो सकता था (6:10-20)। प्रभु में मज़बूत बने रहने के लिए ''परमेश्वर के सारे हथियार'' (6:10-17) और प्रार्थना में बने रहना (6:18-20) आवश्यक था। समझदारी से चलने पर इस अन्तिम निर्देश के बाद पौलुस अपना आशीष वचन लिखने को तैयार था।

और अध्ययन के लिए: दासता

यह संकेत देते हुए कि मसीही समुदाय में दासों का एक नया स्थान था, गलातियों 3:28 स्वामियों और दासों की परमेश्वर तक समान पहुंचने के लिए आधार बनाता है। पौलुस ने कहा कि मसीह में ''न कोई दास और न कोई स्वतन्त्र है।'' इस बात ने दासों को अपने छुटकारे की मांग के लिए उकसाया हो सकता है क्योंकि ''हम सब ने ... क्या दास हो क्या स्वतन्त्र ... एक ही आत्मा के द्वारा एक देह होने के लिए बपतिस्मा लिया'' (1 कुरिन्थियों 12:13)। जब पौलुस ने गलातियों को कहा, ''मसीह के लिए स्वतन्त्रता के लिए हमें स्वतन्त्र किया है अत: ... दासत्व के जुवे में फिर से न जुतो'' (गलातियों 5:1), दासों ने सोचा होगा कि वे अपने स्वामियों से मुक्त हो गए हैं। मसीही स्वामियों ने अपने नये विश्वासों की व्याख्या यह अर्थ निकालने के

लिए की होगी कि वे अपने दासों को मुक्त कर दें; वास्तव में कइयों ने किया भी।

1 कुरिन्थियों 7:20-22 में बाइबल का छात्र इस बात को समझ सकता है कि स्वामियों और दासों के सम्बन्ध में मसीही समाज में क्या क्या हो रहा था:

> हर एक जन जिस दशा में बुलाया गया हो, उसी में रहे।
>
> यदि तू दास की दशा में बुलाया गया हो तो चिन्ता न कर; परन्तु यदि तू स्वतन्त्र हो सके, तो ऐसा ही काम कर। क्योंकि जो दास की दशा में प्रभु में बुलाया गया है, वह प्रभु का स्वतन्त्र की दशा में बुलाया गया है, वह मसीह का दास है।

इस वचन में पौलुस ने कहा कि दासों सहित हर मसीही जीवन में अपनी अपनी स्थिति से संतुष्ट रहे। दासों को दास होने की चिंता नहीं करनी थी, क्योंकि वे मसीह में स्वतन्त्र थे। कुछ दासों को उनके स्वामियों की ओर से स्वतन्त्रता दे दी गई थी और उन्हें अपनी स्वतन्त्रता का इस्तेमाल भलाई के लिए करना आवश्यक था। दोनों ही मामलों में चाहे वे दास रहें या उन्हें मुक्त कर दिया जाए, दास मसीह में स्वतन्त्र थे और मसीही स्वामियों के साथ वे मसीह के दास थे।

जब स्वामी और उसका दास दोनों मसीही बन गए तो एक अलग सी समस्या खड़ी हो गई। फिलेमोन के नाम पौलुस के पत्र में इन्हीं समस्याओं पर बात की गई। ऐसा लगता है कि फिलेमोन कुलुस्से में रहने वाला एक समृद्ध दास-स्वामी था और उसके दास उन्नेसिमुस ने उसका कुछ चुरा लिया था और रोम में भाग गया था। रोम में रहते हुए उन्नेसिमुस का सम्पर्क पौलुस से हुआ जो उस समय वहां नज़रबन्द था और वह मसीही बन गया। दुविधा यह थी कि उन्नेसिमुस के साथ क्या किया जाए। यह स्पष्ट था कि उसे घर भेजा जाए जहां उस पर फिलेमोन कृपा करे। फिलेमोन चाहे मसीही था पर एक भगौड़े दास और चोर को अपने स्वामी के पास वापस भेजना बहुत ही जोखिम भरा काम था। दास के स्वामी मसीही व्यक्ति को एक दास से जो भगौड़ा और चोर दोनों था पर अब भाई हो के साथ कैसी प्रतिक्रिया करनी चाहिए? फिलेमोन का पत्र इस प्रश्न का उत्तर देता है।

फिलेमोन को लिखे पत्र में हम अपने मित्र के साथ व्यवहार करने के पौलुस के मनोविज्ञान को देखते हैं। इससे भी बढ़कर हमें उस सम्बन्ध की समझ आती है जो एक मसीही स्वामी और मसीही दास में होना चाहिए। बेशक हमें नहीं पता कि कहानी में आगे क्या हुआ पर हम यह मान लेना चाहते हैं कि फिलेमोन ने उससे कहीं बढ़कर किया जो पौलुस ने उसे करने को कहा था और सचमुच में उन्नेसिमुस को क्षमा करके स्वतन्त्र कर दिया गया।

कुलुस्सियों 3:11 में पौलुस ने संकेत दिया कि स्वतन्त्र और दास यदि दोनों मसीह में हैं तो उनकी स्थिति में कोई अन्तर नहीं है। उसने आगे दिखाया कि परिवार में अलग अलग भूमिकाओं का सम्मान किया जाता है। उसने कहा, ''हे सेवको, जो शरीर के अनुसार तुम्हारे स्वामी हैं, सब बातों में उन की आज्ञा का पालन करो, मनुष्यों को प्रसन्न करने वालों की नाईं दिखाने के लिए नहीं, परन्तु मन की सीधाई और परमेश्वर के भय से'' (कुलुस्सियों 3:22)। अन्त में पौलुस ने स्वामियों को बताया, ''... अपने अपने दासों के साथ न्याय और ठीक-ठीक व्यवहार करो, यह समझकर कि स्वर्ग में तुम्हारा भी एक स्वामी है'' (कुलुस्सियों 4:1)।

हमारा विरोधी शैतान (6:11)

''शैतान की युक्तियों'' के सामने ''स्थिर रहने'' के लिए मसीही लोगों को ''परमेश्वर के सारे हथियार'' की आवश्यकता है। ''शैतान'' का अनुवाद *diabolos* से किया गया है और इसकी परिभाषा ''आरोप लगाने वाले'' या ''निन्दा करने वाले'' के रूप में की जाती है।[60] ''शैतान'' (प्रकाशितवाक्य 20:2) ''Satan'' का लिप्यन्त्रण है जिसका अर्थ है ''विरोधी।''[61] वह अकेला काम नहीं करता बल्कि वह ''दुष्टात्माओं का सरदार'' है (मत्ती 12:24-27; देखें 25:41)। वह ''आकाश'' और ''अन्धकार और ... जो आकाश में'' है, का हाकिम है (इफिसियों 2:2; 6:12)।

बाइबल स्पष्ट रूप में शैतान के आरम्भ के बारे में नहीं बताती है। परन्तु कुछ जानकारी देती है जिससे हम कुछ निष्कर्ष निकाल सकते हैं। जब आदम और हव्वा अदन की वाटिका में थे, तब शैतान वहां था (उत्पत्ति 3:1)। उत्पत्ति के विवरण में ''सर्प'' की पहचान के किसी भी प्रश्न का उत्तर प्रकाशितवाक्य 20:2 में दिया गया है। यूहन्ना ने स्वर्ग में होने वाले एक युद्ध के बारे में लिखा जिसके बाद उसने कहा कि शैतान को ''नीचे फैंक दिया गया'' (देखें प्रकाशितवाक्य 12:7-9, 17)। परमेश्वर की बनाई हर चीज़ ''बहुत ही अच्छी'' थी (उत्पत्ति 1:31), इस कारण हम निष्कर्ष निकालते हैं कि शैतान नीचे फैंका गया स्वर्गदूत है जो किसी समय अच्छा था परन्तु उसने बुरा बनना चुना।[62]

शैतान के आरम्भ के प्रश्न के सम्भावित उत्तर के रूप में तीन वचन बताए गए हैं:

(1) क्या यशायाह 14:12-15 शैतान के आरम्भ का हवाला हो सकता है? यशायाह के अनुसार नीचे गिराए गए इस तारे पर परमेश्वर का दण्ड था, जो इस बात का संकेत है कि उसका राज्य स्थिर नहीं रह सकता यानी वह अनन्त नहीं है और उसने स्वयं अमरता को पाने की कोशिश की परन्तु नहीं पा सका।

KJV में आयत 12 में ''हे सुबह के तारे'' की अभिव्यक्ति के बजाय ''लुसीफर'' शब्द का इस्तेमाल हुआ है, जो शैतान के लिए प्रसिद्ध नाम बन गया है। परन्तु ऐसी व्याख्या बाद में बनाई गई थी। स्पष्टतया टरटुलियन (चौथी शताब्दी ईस्वी में) द्वारा शैतान पर यह वचन लागू किए जाने से पहले ऐसा नहीं था।

यदि यह हवाला शैतान के लिए नहीं है तो फिर किसकी बात करता है? यशायाह 14:4 के अनुसार परमेश्वर ने यशायाह से कहा, ''उस दिन तू *बेबिलोन के राजा पर* ताना मारकर कहेगा।'' यशायाह अपने लोगों में घोषणा कर रहा था, ''बेबिलोन का राजा चाहे इस समय इस्राएल देश को कुचल रहा है, परन्तु उसका राज्य सदा का नहीं है। परमेश्वर जिसका शासन एकमात्र अविनाशी है एक दिन दुष्ट बेबिलोन को नष्ट कर देगा।'' कविता द्वारा यह वचन अपने सही संदर्भ में देखा जाता है, वास्तविकता में शैतान या उसके आरम्भ के बारे में कुछ नहीं कहता प्रतीत होता है।

(2) ऐसी चर्चा में बार-बार दोहराया जाने वाला एक और वचन लूका 10:18 में मिलता है। यीशु ने इस्राएल के लोगों में प्रचार करने के लिए दो-दो करके बहत्तर चेलों को भेजा था। उसने उन्हें दुष्टात्माओं को निकालने और किसी प्रकार के विष से अप्रभावित रहने की सामर्थ दी। जब वे लौट कर आए तो उन्होंने अपने मिशन में अपनी पूर्ण विजय की खबर दी। तब यीशु ने कहा था, ''मैं शैतान को बिजली के समान स्वर्ग से गिरा हुआ देख रहा था'' (लूका 10:18)।

यीशु ने यह नहीं कहा कि उसने शैतान को स्वर्ग से गिरते देखा। उसने कहा कि उसने शैतान को आकाश से बिजली की तरह गिरते हुए देखा। (''स्वर्ग'' और ''आकाश'' शब्दों का अनुवाद एक ही यूनानी शब्द से किया गया है।) जिस प्रकार से बादलों से बिजली पृथ्वी पर गिरती है वैसे ही यीशु ने आत्मिक रूप में यह माना कि शैतान को उसके सिंहासन से लुढ़का दिया जा रहा था। यीशु की सेवकाई के द्वारा शैतान मनुष्यों की आत्माओं पर अपनी पकड़ को खो रहा था। वह पराजित हो रहा था! इसलिए यह एक और वचन है जो वास्तविकता में शैतान के आरम्भ से जुड़ा नहीं है।

(3) एक और वचन जिसका आम तौर पर उल्लेख किया जाता है वह प्रकाशितवाक्य 12:7-9 में मिलता है:

> फिर स्वर्ग पर लड़ाई हुई, मीकाइल और उसके स्वर्गदूत अजगर से लड़ने को निकले, और अजगर और उसके दूत उस से लड़े। परन्तु प्रबल न हुए, और स्वर्ग में उनके लिए फिर जगह न रही। और वह बड़ा अजगर अर्थात वही पुराना सांप, जो इबलीस और शैतान कहलाता है, और सारे संसार का भरमानेवाला है, पृथ्वी पर गिरा दिया गया; और उसके दूत उसके साथ गिरा दिए गए।

प्रकाशितवाक्य चाहे एक सांकेतिक पुस्तक है परन्तु इस वचन में व्याख्या के लिए अधिक प्रतिज्ञा मिलती लगती है। यीशु ने कहा कि पवित्रता की सेनाओं ने अधर्म की सेनाओं के साथ युद्ध किया। अन्तिम परिणाम यह हुआ कि शैतान और उसके सारे दूतों को स्वर्ग से अपने स्थान खोने पड़े और उन्हें पृथ्वी पर भेज दिया गया। जिस किताब को माना जाता हो कि उसकी व्याख्या प्रतीकात्मक रूप में की जाए उसके इन शब्दों को अक्षरश: कैसे लिया जा सकता है?

इन शब्दों को अक्षरश: ले भी लिया जाए तो शैतान का आरम्भ एक भेद बना रहता है। प्रकाशितवाक्य यह नहीं बताता है कि शैतान का आरम्भ कहां हुआ। यूहन्ना ने स्पष्ट रूप में यह नहीं बताया कि शैतान एक गिराया हुआ स्वर्गदूत है, सिवाय इसके कि उसके दूत हैं जो उसके पीछे चलते हैं। न ही हमें बताया गया है कि स्वर्ग में युद्ध किस बात पर हुआ या यह युद्ध कब तक चला।

प्रासंगिकता

बच्चे और माता-पिता (6:1-4)

बच्चों के लिए आज्ञा मानना और माता-पिता का आदर करना आवश्यक है (6:1-3)। माता-पिता का आदर किए बिना उनकी आज्ञा मानी जा सकती है यानी कुछ लोग अपने माता-पिता की आज्ञा इसलिए मान सकते हैं क्योंकि उन्हें आज्ञा न मानने के परिणामों का डर होता है। परन्तु उनकी आज्ञा माने बिना माता-पिता को वह आदर नहीं दिया जा सकता, जिसके हकदार है। आज्ञापालन का अर्थ अधीन होना नहीं है, परन्तु आदर वह सम्मान है जो आज्ञा मानने को प्रेरित करता है।

माता-पिता की आज्ञा मानना और उनका आदर करना माता-पिता, बच्चों और पूरे समाज के

लिए अच्छा होगा। यदि घर में ये गुण नहीं सिखाए और बच्चों द्वारा माने नहीं जाते तो वे स्कूल, नौकरी, या कलीसिया में भी नहीं किए जाएंगे। बिना आज्ञा मानने और आदर के समाज में उथल पुथल मच जाएगी। अपने माता-पिता की आज्ञा मानकर बच्चे समझदारी से चल रहे होंगे।

माता-पिता से बच्चों को सिखाने को कहा गया है (6:4)। सिखाने का एक नकारात्मक पहलु है। पौलुस ने कहा, ''अपने बच्चों को रिस न दिलाओ।'' इसका अर्थ यह नहीं है कि माता-पिता अपने बच्चों को नाराज़ करने से बचें। सही प्रशिक्षण लेना आम तौर पर बच्चों को नापसन्द होगा। पौलुस की शिक्षा का अर्थ है कि ''उनके क्रोध को न भड़काओ जिससे वे निराश हो जाएं या हिम्मत हार जाएं।'' फिर बच्चों को सिखाने का एक सकारात्मक पहलू भी है। पौलुस ने लिखा, ''प्रभु की शिक्षा, और चेतावनी देते हुए, उनका पालन-पोषण करो।'' ''शिक्षा'' वह चीज़ है जो बच्चे को यह समझाने के लिए कि क्या सही है, करना सिखाया जाता है। ''चेतावनी'' वह होती है, जो बच्चे को उसे करने के लिए जो उसे सिखाया गया है प्रोत्साहित करने के लिए की जाती है।

बच्चों को सिखाने का उद्देश्य अधिकार का सम्मान करना सिखाना है। उन्हें माता-पिता, शिक्षकों, सरकार और परमेश्वर के अधिकार का सम्मान करना आवश्यक है।

सिखाई जाने वाली बातों में इस तथ्य के साथ-साथ कि असफलता अन्त नहीं है ''विश्वास'' (देखें 2 तीमुथियुस 1:5) स्वनुशासन, काम और आत्म-सम्मान है। बच्चे हर काम में जिसे वह करने का प्रयास करते हैं सफल नहीं होते।

बच्चों को प्रशिक्षण देने के लिए *समय* चाहिए। माता-पिता बच्चों के साथ समय बिताने को प्राथमिकता दें। यह सही *उदाहरण* पर भी निर्भर है। बच्चे वही सीखेंगे जो वे अपने माता-पिता को करते देखेंगे। सही प्रशिक्षण के लिए सकारात्मक और सुधारात्मक *अनुशासन,* ईमानदारी से यह *अंगीकार* कि माता-पिता भी गलतियां करते हैं और यह *पुष्टि* बच्चों को कोई अच्छा काम किए जाने पर दिलेरी देती है।

माता-पिता और बच्चे दोनों एक-दूसरे का आदर करते हुए समझदारी से रह सकते हैं। ऐसा होने पर परिवार स्वस्थ, उपजाऊ और प्रसन्न वातावरण में होता है। इसके अलावा प्रभु को महिमा मिलती है और समाज रहने के लिए एक बेहतर वातावरण बनता है।

जे लॉकहर्ट

मसीह पर केन्द्रित परिवार (6:1-4)

अपनी पुस्तक *डेयर टू डिसिप्लिन* में जेम्स डॉबसन ने एक मेंढक की कहानी बताई, जो ठण्डे पानी की कड़ाही में गिर गया था, बर्तन छोटा था, जिस कारण मेंढक यदि चाहता तो आसानी से इसमें से निकल सकता था। धीरे-धीरे पानी का तापमान बढ़ गया। पता नहीं कैसे पानी उबलने की अवस्था तक पहुंच गया। मेंढक बढ़ते हुए तापमान को भूल बर्तन में बैठा रहा। भाप के छलों के बुरी तरह से अपने पास घूमने पर मेंढक आराम से बैठा रहा, जब तक वह उबलकर मर नहीं गया।[63]

कई प्रकार से यह आज के परिवारों की तस्वीर है। संसार का बुरा सिस्टम धीरे धीरे परिवार के विरुद्ध अनैतिक मूल्यों के दबाव के बढ़ने से हमारे घरों को मार रहा है। हमारे घरों के बने

रहने के लिए बाइबल के नियमों की ओर चौकसी से वापस जाना आवश्यक है, जो आत्मा के चलाए जाने वाले मज़बूत परिवारों को बढ़ावा देते हैं।

6:1-4 में पौलुस ने माता-पिता/बच्चे के सम्बन्धों की समीक्षा की। यहां पर हमें मसीह पर केन्द्रित, आत्मा से परिपूर्ण परिवार में पाए जाने वाले तत्वों का पता चलता है।

बच्चों के लिए परमेश्वर की आज्ञा। ''हे बालको, प्रभु में अपने माता-पिता के आज्ञाकारी बनो, क्योंकि यह उचित है। अपनी माता और पिता का आदर कर (यह पहिली आज्ञा है, जिस के साथ प्रतिज्ञा भी है)। कि तेरा भला हो, और तू धरती पर बहुत दिन जीवित रहे'' (6:1-3)।

''बालको'' के लिए पौलुस का शब्द संतान सामान्य शब्द है, उस अर्थ में हम सभी बालक हैं, क्योंकि हममें से हर किसी का एक पिता है और एक माता है। परन्तु यहां पर पौलुस के मन में अपने माता-पिता के घर में रहने वाला कोई भी बच्चा था, जो अभी तक उनके अधिकार और ज़िम्मेदारी के अधीन है। यह शब्द केवल आठ साल के बच्चों के लिए नहीं बल्कि उनके लिए भी हैं, जो बड़े हो चुके हैं पर अभी भी घर में रह रहे हैं। इसमें बच्चों के लिए जब तक वे माता-पिता की छत तले रहते हैं, परमेश्वर की आज्ञा है।

(1) आवश्यक कर्त्तव्य। ''हे बालको, ... अपने माता-पिता के आज्ञाकारी बनो, ...'' (6:1)। परमेश्वर के वचन की कोई आज्ञा जिसकी हाल के वर्षों में उपेक्षा हुई है तो यदि कोई है तो यही है। अपने बच्चों पर माता-पिता के अधिकार का आज समाज में मज़ाक उड़ाया गया है क्योंकि बच्चों के अधिकारों को अत्यधिक बढ़ावा दिया गया है।

कुछ समाजों में चाहे इस बात पर ज़ोर दिया जाता है कि बच्चों को अपना भविष्य और मूल्य तय करने की स्वतन्त्रता होनी चाहिए, माता-पिता के प्रभाव से अलग होना चाहिए पन्तु बाइबल खामोशी से इस बात की पुष्टि करती है कि बच्चों को अपने माता-पिता की आज्ञा माननी चाहिए क्योंकि यह सही है। जिस घर में इस नियम का कड़ाई से पालन किया जाता है, केवल वही घर मज़बूत रह सकता है।

''आज्ञाकार'' शब्द यूनानी भाषा में अपने आप समझ आने वाला है। मूल में इसका अर्थ ''नीचे सुनना'' है। विचार यह है कि बच्चा अपने माता-पिता के अधिकार के नीचे हो और जो कुछ वे कहें उसे सुनें।

पौलुस ने यह नहीं लिखा कि बच्चे ''माता-पिता की आज्ञा, जब वे सही हों, तब मानें।'' बहुत से युवाओं को लगता है कि ''डैड को पता नहीं है कि वह क्या बात कर रहे हैं, इस कारण मुझे उनकी बात नहीं माननी थी'' या ''मां इस प्रश्न पर गलत है, इस कारण मैं वही करूंगा जो मैं चाहूंगा।'' परमेश्वर का वचन कहता है, ''हे बालको, प्रभु में अपने माता-पिता के आज्ञाकारी बनो क्योंकि उचित है।'' बच्चे चाहे अपने माता-पिता के निर्देशों से सहमत न हों पर अपने माता-पिता की आज्ञा मानना हमेशा सही होता है। परिवार के लिए परमेश्वर की यही योजना है और बच्चों को माता-पिता के अधिकार की रक्षा के अधीन अपने आपको स्वेच्छा से रखना चाहिए।

(2) नियमित आयाम। बच्चे आज्ञा कैसे मानें? पौलुस ने आज्ञा दी कि बच्चे ''प्रभु में आज्ञाकारी'' बनें (6:1)। इसका क्या अर्थ है? इसका अर्थ यह नहीं है कि यदि माता-पिता मसीही हैं तो बच्चे आज्ञाकारी हों, यदि वे मसीही नहीं हैं तो बच्चों को उनकी आज्ञा मानने की कोई आवश्यकता नहीं है। पौलुस का इरादा वही था जो कुलुस्सियों 3:18 में पत्नियों को निर्देश

देते समय था: ''हे पत्नियो, जैसा प्रभु में उचित है, वैसा ही अपने अपने पति के अधीन रहो।'' क्या पत्नियों को अपने पतियों की आज्ञा केवल तभी माननी चाहिए यदि वे मसीही हों? नहीं! बल्कि पौलुस का इरादा यह है कि पत्नियां हर तरीके से, जिससे परमेश्वर को महिमा मिले अपने अपने पति के अधिकार को मानें। वे इस प्रकार से अधीन हों जो मसीह के अनुयायी को शोभा देता है।

6:1 में यहां ''प्रभु में'' का यही अर्थ है। बच्चों को अपने माता-पिता की आज्ञा वैसे ही माननी आवश्यक है जिससे परमेश्वर को महिमा मिले।

यदि माता-पिता अपने बच्चों से कुछ काम करने को कहते हैं और वह अपमान भरे लहज़े से उत्तर देता है, ''ठीक है! मैं कर दूंगा!'' तो वह प्रभु में अपने माता-पिता की आज्ञा का पालन नहीं कर रहा। यदि वह अपने माता-पिता के साथ उनके नियमों पर बहस करता है या जब उसे लगे कि उन्हें पता नहीं चलेगा और नियमों को तोड़ देता है तो वह प्रभु में अपने माता-पिता की आज्ञा नहीं मान रहा है।

कुलुस्सियों 3:20 कहता है, ''हे बालको, सब बातों में अपने अपने माता-पिता की आज्ञा का पालन करो, क्योंकि प्रभु इस से प्रसन्न होता है।'' नियम चाहे कितने भी रूखे लगें पर यह इस बात की पहचान है कि बच्चा प्रभु को प्रसन्न करने की कोशिश कर रहा है यदि वह हर बात में अपने माता-पिता की आज्ञा मानता है।

यदि माता-पिता बच्चे से कुछ ऐसा करने को कहें जो परमेश्वर की इच्छा के उलट हो? यदि ऐसा कभी हो जाए तो उस बच्चे के लिए नियम एक पत्नी वाला ही है जिसका पति परमेश्वर के वचन के विरोध में उससे कुछ करने को कहता है। उसे उस व्यक्ति के बजाय परमेश्वर के ढंग को मानना चुनें। उस नियम के प्रति वफ़ादारी का अर्थ बेशक यह है कि बच्चा अपने माता-पिता की इच्छाओं को तोड़ने के परिणाम भोगने को तैयार रहे जिससे उसके जीवन में परमेश्वर को महिमा मिल सके।

(3) मिल चुका लाभांश। ''अपनी माता और पिता का आदर कर (यह पहिली आज्ञा है, जिस के साथ प्रतिज्ञा भी है)। कि तेरा भला हो, और तू धरती पर बहुत दिन जीवित रहे'' (6:2, 3)। क्या परमेश्वर प्रतिज्ञा किए हुए इस लाभांश में व्यक्तिगत जीवन की बात कर रहा था या राष्ट्रीय जीवन की? सम्भवतया दोनों की। अपने माता-पिता का आज्ञाकार बच्चा अधिक देर तक जीएगा और आनन्दपूर्ण जीवन बिताएगा। कारण यह है कि जो बच्चा अपने माता-पिता की सलाह को सुनता और मानता है वह कई ऐसे निर्णयों और गतिविधियों से बच जाएगा जो उसके लिए हानिकारक होने थे।

जब परमेश्वर ने इस्राएल को यह आज्ञा दी तो उसने इस पर यह लाभांश क्यों रख दिया? शायद इसलिए क्योंकि अपने माता-पिता के साथ बच्चे का सम्बन्ध भविष्य के उसके सारे सम्बन्धों की कुंजी है। यदि वह अपने माता-पिता को आदर और सम्मान नहीं देगा तो वह सीख नहीं पाएगा कि अपने सहपाठियों, शिक्षकों, सहकर्मियों या अन्य अधिकारियों के साथ कैसे मिलना है। घर बच्चे को इस संसार में सही ढंग से काम करने के लिए तैयार करने के लिए प्रशिक्षण का मैदान है।

आज्ञाकारिता के लिए परमेश्वर के लाभांश में न केवल व्यक्तिगत महत्व बल्कि राष्ट्रीय

महत्व भी है। कोई राष्ट्र अपने घरों से अधिक मज़बूत नहीं है। कोई भी राष्ट्र खतरे में होता है जब इसके बच्चे घर में आज्ञाकारी होना नहीं सीख रहे हों।

पिताओं के लिए परमेश्वर का निर्देश। ''हे बच्चे वालो अपने बच्चों को रीस न दिलाओ परन्तु प्रभु की शिक्षा, और चेतावनी देते हुए, उनका पालन-पोषण करो'' (6:4)।

(1) समर्पण का संकेत। पौलुस ने तीन नियम बताए जो अपने बच्चों के साथ व्यवहार करने में पिताओं के लिए परमेश्वर की योजना का भाग हैं। पहला नियम घर में बच्चों के प्रति समर्पण का है। इसका संकेत आयत 4 में मिलता है: ''हे बच्चे वालो अपने बच्चों को रीस न दिलाओ।''

बच्चे के लिए स्वस्थ ढंग से बढ़ने और परिपक्व होने के लिए उसे यह पता होना आवश्यक है कि उसकी माता और पिता उसके प्रति समर्पित हैं। समर्पण की इस भावना के न होने पर बच्चे का आत्मसम्मान और मनोवैज्ञानिक बेहतरी पूरी तरह से खण्डित हो जाते हैं। किसी भी बच्चे के लिए ऐसा होने का पक्का तरीका उसके पिता का उसे बार-बार चिड़ाना और निराश करना है (कुलुस्सियों 3:21)।

(2) दिया गया अनुशासन। ''परन्तु प्रभु की शिक्षा और चेतावनी देते हुए उनका पालन पोषण करो'' (6:4)। पौलुस ने सकारात्मक पहलू बताया कि पिता अपने बच्चों से कैसे जुड़ सकते हैं। प्रशिक्षण और निर्देश होना अवश्य है। इन बातों के बिना बच्चा आत्मिक, भावनात्मक या मनोवैज्ञानिक रूप में स्वस्थ बड़ा नहीं हो सकता।

''चेतावनी'' क्या है? इसमें वे नियम कायदे और तरीके हैं जिन से एक बच्चे को अपना जीवन जीना है। इस गोत्र शिक्षा को उस तक पहुंचाने की ज़िम्मेदारी माता और पिता की है। केवल इस ज्ञान से ही बच्चे को पता चलेगा कि क्या सही है और क्या गलत, किस बात से जीवन में आशिषें मिलती हैं और किस से श्राप मिलते हैं।

ऐसी चेतावनी ''प्रशिक्षण'' के साथ दोहराई जा सकती है। यहां इस शब्द का अर्थ बच्चे को सिखाए जा रहे नियमों, कायदों और असूलों के अनुसार रहने के लिए अपने आपको अनुशासित करने में सहायता करना है। उसे यह सीखना आवश्यक है कि आज्ञा मानने के प्रतिफल मिलेंगे और आज्ञा तोड़ने के परिणाम भुगतने पड़ेंगे।

कई घरों की त्रासदी यह है कि बच्चों को बिना अगुआई दिए कि आज्ञाओं को कैसे मानना है या चेतावनियों को न मानने के परिणामों को बताए बिना आज्ञाएं दे दी जाती हैं। ऐसी अस्पष्टता से बच्चा उलझन में पड़ जाता है और उसका व्यवहार आवारा सा हो जाता है। पौलुस ने कहा कि परमेश्वर की योजना में सामग्री और अगुआई दोनों हैं।

(3) इरादा की गई दिशा। ''... परन्तु प्रभु की शिक्षा और चेतावनी देते हुए उनका पालन पोषण करो'' (6:4)। पिताओं के पास प्रभु में या प्रभु के बाहर, केवल दो दिशाएं हैं, जिनमें वे अपने बच्चों को ले जाना चुन सकते हैं। बच्चों को या तो बाइबली नियमों के अनुसार सिखाया जा सकता है या मानवीय नियमों के अनुसार। पहले ढंग से घर में आनन्द, शान्ति और मेल आता है। दूसरा ढंग बच्चे को दूसरों की चिन्ता किए बिना अपने लिए जीना सिखाता है। एक ढंग ऐसे जीवन की ओर ले जाता है जिसमें कोई पछतावा नहीं है, जबकि दूसरा जीवन में दूसरों के साथ व्यवहार करने में कई तरह की परेशानियां लाता है।

माता-पिता को अपने बच्चों के लिए शिक्षा और चेतावनी में सही दिशा देनी आवश्यक है।

यह काम स्कूल के शिक्षकों, वकीलों या कलीसिया को नहीं दिया जाना चाहिए। ये दूसरे लोग सहायक हो सकते हैं, परन्तु बच्चे के जीवन को ईश्वरीय दिशा देने की ज़िम्मेदारी माता-पिता की है।

सारांश। परमेश्वर हमारे परिवारों को वैसा ही चाहता है जैसा उसने चाहा था कि वे बनें; वह हमें संसार के सिस्टम के सांचे में ढलने से बचाना चाहता है। मसीही परिवारों में फूट न पड़े। मसीही विवाह जीवन भर चले। हम विवाह के, अपने परिवारों के और अपने जीवनों के हर पहलू को परमेश्वर के आत्मा के वश में दे दें।

काम में आत्मा से परिपूर्ण होना (6:5-9)

स्वामी/दास सम्बन्धों के लिए दी गई चार में से तीन आयतें दासों के लिए हैं। यह आश्चर्य की बात नहीं है, क्योंकि आरम्भिक मसीही समाज के इसी भाग में से आते थे (देखें 1 कुरिन्थियों 1:26)। उन्हीं नियमों में से कुछ आज नौकरियों में कर्मचारियों पर लागू होते हैं।

नियोक्ता के लिए कर्मचारी का निष्कपट सम्मान। ''हे दासो, जो लोग शरीर के अनुसार तुम्हारे स्वामी हैं, अपने मन की सीधाई से डरते, और कांपते हुए, जैसे मसीह की, वैसे ही उन की भी आज्ञा मानो ...'' (6:5, 6)। पौलुस ने यह शर्त रख दी कि दास आज्ञाकारी हों। ऐसा ही नियम कर्मचारी पर लागू होता है। कर्मचारी के लिए हर बात में, यह नहीं कि जब निरीक्षक उसके काम को देख रहा हो, आदर करने वाला होना आवश्यक है। उन्हें नियोक्ता को प्रसन्न करने की कोशिश करनी चाहिए, परन्तु मुख्य ध्यान परमेश्वर को प्रसन्न करना हो। फिर मसीही कर्मचारी कार्यालय, खेत, फैक्टरी में परमेश्वर का प्रतिनिधि है।

कोई शर्त नहीं दी गई है। प्रेरित ने यह नहीं कहा कि ''अपने स्वामी की आज्ञा मानो यदि उसकी बातें ठीक लगती हों।'' उसने यह नहीं कहा कि ''अपने स्वामी की आज्ञा मानो यदि उस काम में जो उसने दिया है तुम्हें अच्छा लगे।'' उसकी बात का अर्थ यह था कि मसीही व्यक्ति आदर, सम्मान और ईमानदारी से काम करे।

जब मसीही व्यक्ति अपने नियोक्ता के साथ और असहयोग या असम्मानपूर्ण कार्य करता है तो वह अधिकार और अधीनता के परमेश्वर के बुनियादी नियम को तोड़ रहा होता है जो उसने अपने संसार में बनाया था। वह चाहता है कि इस नियम को नियोक्ता/कर्मचारी में बनाए रखा जाए।

आज्ञा न मानने से अधिकार/अधीनता का परमेश्वर का नियम ही नहीं टूटता, बल्कि मसीही गवाही को भी हानि होती है। काम के स्थान पर सुसमाचार के सुनाए जाने के लिए रास्ता खुलने का एकमात्र प्रभावशाली तरीका इस प्रकार से काम करना है जिससे कर्मचारी के रूप में मसीही मानकों और मूल्यों का पता चले।

हमें अपने आप से पूछना चाहिए, ''क्या मेरे काम करने से मेरी गवाही की विश्वसनीयता बढ़ेगी जब मैं अपने नियोक्ता या अपने सहकर्मी कर्मचारियों के साथ अपने विश्वास को साझा करने की कोशिश करता हूं?''

नियोक्ता के प्रति कर्मचारी का स्वैच्छिक व्यवहार। ''हे दासो जो लोग शरीर के अनुसार तुम्हारे स्वामी हैं, ... जैसे मसीह की वैसे ही उनकी भी आज्ञा मानो ...। उस सेवा को मनुष्यों

की नहीं, परन्तु प्रभु की जानकार शुभ इच्छा से करो'' (6:5-7)। कुलुस्से के मसीही लोगों को इससे मिलता पौलुस की चेतावनी यहां निर्देशात्मक है: ''जो कुछ तुम करते हो, तन मन से करो, यह समझ कर कि मनुष्यों के लिए नहीं, परन्तु प्रभु के लिए करते हो'' (कुलुस्सियों 3:23)। मसीही कर्मचारी को अपने काम ऐसे करने चाहिए जैसे यीशु पृथ्वी पर निरीक्षक हो। काम करते हुए उन्हें सोचना चाहिए, ''मैं इस घर को ऐसे बनाऊंगा जैसे यीशु ने इसमें रहना हो''; ''मैं इस मशीन को ऐसे लगाऊंगा जैसे यीशु इसे इस्तेमाल करने वाला हो।'' यदि हम सचमुच में यीशु के लिए काम करें तो बेशक बिना बहस या देरी के आज्ञा मानने को तैयार हैं। पौलुस के अनुसार नियोक्ताओं को हमारा यही उत्तर होना चाहिए।

यदि मसीही कर्मचारी स्वेच्छा के व्यवहार से काम नहीं कर सकता तो उसे एक पसन्द चुननी आवश्यक है। या तो वह अपना काम बदल दे या अपने व्यवहार को बदल दे। पहली सदी में दास यदि अपने स्वामियों की सेवा ऐसे कर सकते थे जैसे वे प्रभु यीशु की सेवा कर रहे हों तो हम भी वैसे ही काम कर सकते हैं! हम में से हर किसी को यह विचार करना चाहिए कि हम ऐसा अलग क्या कर सकते हैं जिससे काम करते हुए हमारे जीवनों में आत्मा बेहतर ढंग से दिखाई दे।

नियोक्ता के लिए कर्मचारी का अपना बेहतरीन योगदान देने का तर्क। पवित्र शास्त्र आत्मा से परिपूर्ण कर्मचारी के विलक्षण काम और व्यवहार के दो कारण बताता है। एक तो सकारात्मक है जबकि दूसरा नकारात्मक। सकारात्मक कारण आयत 8 में दिया गया है: ''क्योंकि तुम जानते हो, कि जो कोई जैसा अच्छा काम करेगा, चाहे दास हो, चाहे स्वतन्त्र; प्रभु से वैसा ही पाएगा।''

हम ने देखा है कि पौलुस के समय में दासों के साथ सम्पत्ति की तरह व्यवहार किया जाता था चाहे वे कितने ही पढ़े-लिखे क्यों न हों। सच्चाई यह थी कि पढ़ा लिखा, सभ्य दास जो मसीही बन जाता था उसके साथ अपने नये विश्वास के कारण और भी कठोर व्यवहार किया जा सकता था। पौलुस ने दासों को पूरी कोशिश करना न छोड़ने के लिए प्रोत्साहित किया, क्योंकि वह समय आ रहा था जब प्रभु ने उनकी विश्वासयोग्य सेवा के लिए उन्हें प्रतिफल देना था।

कर्मचारियों के रूप में हो सकता है कि हमें हर बार वह न मिले जिसके इस जीवन में हम हकदार होते हैं। हो सकता है कि हमें कम या अधिक वेतन दिया जाए। परन्तु वह समय आ रहा है जब प्रभु संतुलन बराबर कर देगा। काम के लिए मिली मज़दूरी ही मसीही व्यक्ति का वेतन नहीं है। एक दिन यीशु अपने वफ़ादारों को ''मीरास का प्रतिफल'' देगा। सचमुच अपने-अपने काम पर परिश्रम करते हुए हम सब उसकी सेवा कर रहे हैं। हम जहां भी और जिसके लिए भी काम कर रहे हों, हमारा असल मालिक यीशु है। प्रतिदिन के जीवन में हमें चाहे जैसे भी अच्छे बुरे अनुभव हों, उससे हमारा व्यवहार विचलित नहीं होना चाहिए। यदि हम पूरे मन से काम करते हैं तो प्रभु उचित समय पर देखेगा कि हमें पूरा-पूरा प्रतिफल मिले।

ऐसी सेवा का नकारात्मक कारण कुलुस्सियों 3:24, 25 में मिलता है: ''तुम प्रभु मसीह की सेवा करते हो। क्योंकि जो बुरा करता है, वह अपनी बुराई का फल पाएगा; वहां किसी का पक्षपात नहीं।''

मसीही लोगों को काम पर गलती नहीं करनी चाहिए। इसका कोई बहाना नहीं है। अपनी गलतियों के हम दूसरों पर दोष नहीं लगा सकते। परमेश्वर सब कुछ देखता है और गलतियों का बदला लेगा।

संयोग से किसी नियोक्ता के लिए जोकि साथी मसीही है काम करने के सुअवसर का अर्थ यह नहीं है कि काम करने वाले को कम प्रयास या उपज से वेतन मिल सकता है। इसके विपरीत नियोक्ता को जोकि मसीह में भाई है काम और आदर के अर्थ में बेहतरीन दिया जाना चाहिए।

कर्मचारियों के प्रति नियोक्ता का कर्त्तव्य। ''और हे स्वामियो, तुम भी धमकियां छोड़कर उन के साथ वैसा ही व्यवहार करो, क्योंकि जानते हो, कि उन का और तुम्हारा दोनों का स्वामी स्वर्ग में है ...'' (6:9)। पहली सदी के दासों के स्वामियों के लिए इन शब्दों को व्यवहार में लाना कितना कठिन रहा होगा! रोमी साम्राज्य में स्वामी को अपने दासों पर पूरा पूरा नियन्त्रण होता था। यहां तक कि जीवन और मरन की शक्ति भी उसके पास थी। पौलुस ने यहां पर अपने पाठकों को समझाया कि आत्मा से परिपूर्ण स्वामी अलग हो। उसे अपने दासों के साथ सच्चाई और ईमानदारी से व्यवहार करना चाहिए।

यहां बताया गया नियम क्या है? यह मत्ती 7:12 वाले ''सुनहरी नियम'' से कम नहीं है। नियोक्ताओं को अपने कर्मचारियों के साथ वैसे ही व्यवहार करना चाहिए जैसे यदि वे कर्मचारी होते और चाहते कि उनके नियोक्ता उनके साथ करें।

मसीही प्रबन्धक को अपने लिए काम करने वालों के प्रति बड़ी ज़िम्मेमदारी है। उसे अपने कर्मचारियों की भलाई की इच्छा करना आवश्यक है, क्योंकि पौलुस ने कहा, ''उनके साथ वैसा ही व्यवहार करो।'' यदि नियोक्ता उम्मीद करता है कि उसके कर्मचारी उसके लिए दिल से काम करें तो उसे उनके लिए दिल से काम करना आवश्यक है।

कर्मचारी के प्रति नियोक्ता का सही व्यवहार। कर्मचारी को गालियां नहीं दी जानी चाहिए, क्योंकि पौलुस ने स्वामियों को ''धमकियां छोड़'' देने का निर्देश दिया। काम करने वाले को प्रेरणा इसी प्रकार दी जानी चाहिए। यीशु ने अपने साथियों के साथ कभी ऐसे व्यवहार नहीं किया।

सफल नियोक्ता इस बात को याद रखेगा कि स्वर्ग में उसका भी स्वामी वही है जो उसके कर्मचारी का है। उसे उसी परमेश्वर के सामने न्याय में खड़े होना है। यदि परमेश्वर उन कर्मचारियों का पक्षपात नहीं करता जो मसीही हैं पर अपना काम सही ढंग से नहीं करते, तो वह उन नियोक्ताओं को जो ईश्वरीय नियमों से जान-बूझकर काम नहीं कर पाएंगे, नज़रअन्दाज़ नहीं करता।

सारांश। हम ''सामाजिक सुसमाचार'' का प्रचार नहीं करते हैं, बल्कि हम वह सुसमाचार सुनाते हैं जिसके सामाजिक प्रभाव हैं। यदि हमारे जीवन परमेश्वर को समर्पित हैं और उसके आत्मा के नियन्त्रण में हैं तो हमारे काम करने के ढंग में फर्क आ जाएगा। मसीहियत का अर्थ केवल आराधना की मण्डली नहीं है। बल्कि यह काम का माहौल भी है! यदि हम अपने काम के द्वारा अपने जीवनों में दिखाई देने के लिए आत्मा के प्रभावों को काम करने देते हैं तो हमारे सहकर्मियों को हमारी आराधना की हमारी गवाही को मानने में कठिनाई नहीं होगी!

क्रिस बुलर्ड

हमारा शत्रु (6:10-12)

शैतान हमारा आरोप लगाने वाला और हमारा विरोधी है। वह शक्तिशाली है (देखें 1 पतरस 5:8) और हमारे विरुद्ध कपटपूर्ण चालें या युक्तियों का इस्तेमाल करता है। हम पर हमला करने

के लिए वह चालाकी भरी चालें चलता है। आज वह लोगों को पाप में वैसे ही ले जाता है जैसे सदियों से ले जाता रहा है। यूहन्ना ने 1 यूहन्ना 2:15-17 में ''शरीर की अभिलाषा और आंखों की अभिलाषा और जीविका का घमण्ड'' की बात की। ''शरीर की अभिलाषा'' में पेट की भूख, ''आंखों की अभिलाषा'' में पाने की इच्छा और ''जीविका का घमण्ड'' में प्राप्त करने की इच्छा शामिल है।

उत्पत्ति 3:6 में शैतान ने हव्वा को इन्हीं तीन ढंगों से भरमाया था। उसने देखा कि मना किया गया फल ''खाने के लिए अच्छा'' (शरीर की अभिलाषा), ''देखने में मनभाऊ'' (आंखों की अभिलाषा) ''बुद्धि देने के लिए चाहने योग्य'' (जीविका का घमण्ड) था।

यीशु के परीक्षा में पड़ने पर शैतान उसके पास यही ढंग लेकर आया था। पत्थरों को रोटियां बनाने की परीक्षा से शरीर की अभिलाषा की ओर ध्यान दिलाया था। संसार के राज्यों की पेशकश से आंखों की अभिलाषा की ओर ध्यान दिलाया था। शैतान का सुझाव कि यीशु अपने आपको मन्दिर की दीवार से गिरा दे जीविका के घमण्ड को दिखाने के लिए उसके लिए परमेश्वर की देखभाल को साबित करता है (मत्ती 4; लूका 4)।

आज हमारे सामने ऐसी ही परीक्षाएं आती हैं। शैतान आज भी लोगों पर इन्हीं तीन तरीकों से वार करता है। न तो शरीर की भूख, न पाने और प्राप्त करने की इच्छा अपने आप में गलत है; परन्तु यदि वे हमारे जीवनों की प्राथमिकता बन जाती है या उन्हें अनुचित ढंग से पूरा किया जाए तो वे गलत हैं।

अच्छी खबर यह है कि मसीह ने अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा शैतान को पराजित कर दिया है (इब्रानियों 2:14, 15; देखें प्रकाशितवाक्य 20:10)।

जे लॉकहर्ट

प्रतिदिन के झगड़े: अपने शत्रु शैतान को पहचानना (6:10-12)

यदि हम परमेश्वर के लिए जी रहे हैं तो हम एक बड़ी लड़ाई लड़ रहे हैं। मसीही व्यक्ति को जीवन के खेल के मैदान में नहीं बल्कि युद्ध के मैदान में बुलाया जाता है। इसके अलावा सामने वाला शत्रु मानवीय शरीर में नहीं है बल्कि यह लड़ाई आत्मिक दुष्टता की खतरनाक सेनाओं से है। यह लड़ाई ज्योति और अंधकार, जीवन और मृत्यु, स्वर्ग और नरक के बीच में है। इस संग्राम में यीशु का नाम लेने वाला है, शामिल है। किसी को भी किसी भी कारण से छूट नहीं है; हर किसी को लड़ना है।

हम कैसे लड़ सकते हैं? क्या कोई युद्ध नीति है जिससे हम विजयी हो सकें? पौलुस ने अंधकार की सब सेनाओं पर विजय पाने की ईश्वरीय युद्ध नीति बताई है।

विजय पाने का पहला कदम 6:10-12 में है। हमें शत्रु की युक्तियों के विरुद्ध लड़ने के लिए प्रभु की सामर्थ पर निर्भर रहना आवश्यक है:

> निदान, प्रभु में और उस की शक्ति के प्रभाव में बलवन्त बनो। परमेश्वर के सारे हथियार बान्ध लो; कि तुम शैतान की युक्तियों के साम्हने खड़े रह सको। क्योंकि हमारा यह मल्लयुद्ध, लोहू और सांस से नहीं, परन्तु प्रधानों से और अधिकारों से, और उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में हैं (6:10-12)।

किसी भी सेना के जासूसी दल इसके युद्ध में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं क्योंकि इससे अधिकारियों को शत्रु का पता चल जाता है और उसकी नीतियों की समझ आ जाती है। जब तक हमें पता नहीं है कि शत्रु कौन है, वह कहां है और वह क्या कर सकता है, तब तक हम उसे कैसे हरा सकते हैं? परमेश्वर के वचन के अनुसार हमारा वास्तविक विरोधी स्वयं शैतान है।

परमेश्वर ने हमें शैतान के आरम्भ के बारे में चाहे स्पष्ट नहीं बताया परन्तु उसने इतना स्पष्ट कर दिया है कि शैतान कैसा है, वह क्या कर रहा है और वह कहां जा रहा है। मसीह का हर सिपाही जो बुराई की शक्तियों के विरुद्ध अपने व्यक्तिगत युद्ध में जीतने का इच्छुक है उसके लिए शत्रु के बारे में जानना आवश्यक है।

शैतान परमेश्वर नहीं है इसलिए वह एक सृजा हुआ जीव है जो परमेश्वर की तरह अनादि नहीं है। इस कारण अपने ज्ञान और गतिविधि में वह सीमित है। वह सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान या सर्वव्यापक नहीं है। यदि हमारे पास अपने जीवनों में परमेश्वर की सामर्थ है तो वह अभेद्य शत्रु नहीं है। आइए देखते हैं कि हमारे विरोधी शैतान के बारे में इफिसियों 6 में पौलुस ने क्या कहा।

शैतान युक्तियां करने वाला है (6:11)। शैतान किसी को भी स्वर्ग या नरक में से चुनने की पेशकश करता है? बेशक नहीं! उसे इस बात की समझ है कि कोई भी अनन्तकाल के परमानन्द का छोड़ अनन्तकाल के संताप को नहीं चुनेगा। वह चालाकियों पर निर्भर है और हमारी आत्माओं के किलों पर कब्जा करने की उसकी योजनाएं चालाकियों से भरी हैं। पौलुस ने हमें चेतावनी दी कि हम शैतान के बातों में न आएं, ''क्योंकि हम उसकी युक्तियों से अनजान नहीं'' (2 कुरिन्थियों 2:11)।

वे युक्तियां क्या हैं? शैतान का आक्रमण तिहरा होता है। वह शरीर की अभिलाषा, आंखों की अभिलाषा और जीविका के घमण्ड पर ध्यान दिलाता है (देखें 1 यूहन्ना 2:15-17)। चालाकियों से वह हमें इस विचार में ले आता है कि हम बुराई से एकदम निकल सकते हैं। वह हमें यकीन दिलाता है कि संसार में इस समय हमारी आवश्यकताएं सबसे महत्वपूर्ण हैं। शैतान हमें बताता है कि पाप के वर्तमान आनन्द अन्त में मिलने वाले दण्ड से कहीं बढ़िया हैं। चालाकी से और योजनाबद्ध ढंग से वह लोगों को आत्मिक विद्रोह के मार्ग में ले जाता है। मानवीय कल्पना, समझ और चतुराई शैतान की धूर्तता के सामने कुछ भी नहीं है। युक्तियां बनाने वाले पर इसमें विजय पाने के लिए हमें परमेश्वर की सहायता की आवश्यकता है।

शैतान एक आत्मिक प्राणी है (6:12)। प्रभु की कलीसिया के लिए वह दिन बहुत बड़ा होगा जब मसीही लोगों को यह समझ आ जाएगा कि हर वह बात जो आत्मिक है वह धार्मिक नहीं है। बाइबल कहती है, ''हे प्रियो, हर एक आत्मा की प्रतीति न करो: वरन आत्माओं को परखो, कि वे परमेश्वर की ओर से हैं कि नहीं'' (1 यूहन्ना 4:1)। बहुत सी भरमाने वाली आत्माएं शैतान के झंडे तले संसार में निकल चुकी हैं।

हमारी लड़ाई किसी ऐसे शत्रु से नहीं है जिसे पकड़ा जा सके, तलवार से काटा जा सके या गोली से उड़ाया जा सके। यह लड़ाई उन शैतानी शक्तियों से है जिनके हथियार झूठ, झूठी शिक्षाएं, झूठे धर्म, झूठी फिलास्फियां और सच्चाई का चलाकी से बिगाड़ हैं। हमारा विरोधी एक आत्मिक जीव है जिसका मुख्यालय एक और आयाम के अदृश्य क्षेत्रों में है।

शैतान मज़बूत है (6:12)। शैतान को ज़बर्दस्त शक्ति वाले के रूप में दिखाया गया है।

हमारे लिए जो मांस और लहू हैं वह एक प्रबल शत्रु है। अपने आत्मिक शत्रु की शक्ति को कम आंकना भयानक गलती होगी।

शैतान के इतना शक्तिशाली होने का एक कारण यह है कि वह अकेला नहीं है। वह स्वर्गीय सेनाओं पर शासन करता है जो आत्मिक दुष्टता के उसके मिशन में उसकी सहायता करते हैं। 6:12 में उन्हें अंधकार के हाकिम, अधिकार और शक्तियां, और बुराई की आत्मिक शक्तियां बताया गया है। हम नहीं जानते कि दुष्टता की इतनी बड़ी सेना में कितने शैतानी दूत होंगे।

कितना त्रासदी भरा है जब लोग शैतान को एक मज़ाकिया छोटे से आदमी के रूप में दिखाकर जो अपने सिर पर सींग लेकर लाल सूट पहनकर और हाथ में छड़ी लेकर आस पास भागते हुए दिखाकर शैतान को हंसी में उड़ाने की कोशिश करते हैं! शैतान संसार का मसखरा राजकुमार नहीं है। पौलुस ने घोषणा की कि वह इस संसार का ईश्वर है (देखें 2 कुरिन्थियों 4:4)। वह शक्ति के साथ शासन करता है। वह कमज़ोर नहीं बल्कि शक्तिशाली है। वह बलवान है और उसका अधिकार इतना बड़ा है कि हम अकेले उसके सामने खड़े नहीं हो सकते। हम कमज़ोर हैं। हमारी अधिकतर पराजय तब होती हैं जब हमें लगता है कि हमारे अन्दर लड़ाई जीतने के लिए आवश्यक शक्ति है। जीतने का एकमात्र ढंग ''प्रभु में और उस की शक्ति के प्रभाव में बलवन्त'' बनना है (6:10)।

शैतान दुष्ट है। हमारा शत्रु ऐसा ही है। शैतान उस सब का प्रतिनिधित्व करता है जो परमेश्वर नहीं है। परमेश्वर को जहां ज्योति के रूप में दिखाया जाता है वहीं शैतान को केवल अंधकार पर शासन करते हुए दिखाया जा सकता है। यीशु ने उसे झूठा और हर प्रकार के झूठ का पिता कहा; उसने उसे मनुष्यों के प्राणों का हत्यारा भी कहा (यूहन्ना 8:44)।

जो कुछ भी मनुष्य को भ्रष्ट करता है, जो कुछ भी मनुष्य को आहत करता है, जो कुछ भी बुरा है, अंधकार है, कड़वा है और निंदनीय है वह सब शैतान का ही है। वह उस सब का जो भ्रष्ट और गन्दा करने वाला है, सेवक है। उसने कभी एक भी जीवन को आशीष नहीं दी; उसने कभी एक भी आत्मा को वह करने के लिए प्रेरित नहीं किया जो सही और पवित्र है। हमारा शत्रु बिल्कुल दुष्ट है।

सारांश। शैतान का युद्ध हमारे साथ नहीं है। उसकी असल लड़ाई संसार के पवित्र जन के साथ है, परन्तु उसका हमला मसीही लोगों पर होता है क्योंकि वह जानता है कि परमेश्वर ने हम पर अपना प्रेम और लगाव रखा है। इस युद्ध को जीतने के लिए हमें उसके दुष्ट स्वभाव के बारे में जानना और उसकी शक्ति से सावधान रहना आवश्यक है।

प्रतिदिन के झगड़े: लड़ाई के लिए तैयार होना (6:13-20)

परमेश्वर का एक बड़ा महाशत्रु है जो परमेश्वर के शासन को पलटकर उसे उसके ही राज्य से निकालना चाहता है। दो सिंहासनों की लड़ाई बड़ी खतरनाक है। परमेश्वर पुरुषों और स्त्रियों के मनों में राजाओं के राजा के रूप में अपनी सही स्थिति बनाए रखने का इच्छुक है जबकि शैतान उस अधिकार को छीन लेने के प्रयास में रहता है। परमेश्वर की संतान के रूप में हमें इस बड़े शत्रु के विरुद्ध जो हमारे परमेश्वर को गद्दी से उतारने की कोशिश में है के साथ लड़ाई में धार्मिकता की सेनाओं में शामिल होने को कहा जाता है।

हर मसीही के लिए जो इस युद्ध को जीतना चाहता है बचाव की तीन कतारें खुली हैं। पहली ये है कि हम अपने विरोधी के बारे में अपने आप को शिक्षित करें। दो और हिस्से मसीही सिपाही की प्रभावकारी नीति पर विचार किया जाना और उन्हें व्यवहार में लाना चाहिए।

परमेश्वर के हथियारों से लैश होना। हमारी लड़ाई लहू और मांस की नहीं बल्कि स्वर्गीय स्थानों में आत्मिक शत्रुओं से है। इसलिए हमें जीतने के लिए परमेश्वर के हथियारों की आवश्यकता है।

(1) *सत्य का कमरबंद* (6:14)। लड़ाई में जाने से पहले रोमी सिपाही के लिए सबसे पहले अपने कुर्ते के कोने ऊपर उठाकर उन्हें अपने कमरबंद में फंसाना होता था। कमरबंद से उसके कपड़े एक जगह इकट्ठे हो जाते थे, जिससे वे आसानी से हिल-जुल सकता था।

सिपाही अपने कमरबंद यानी बैल्ट पर निर्भर होता था। यह पतली सी बैल्ट नहीं होती थी जैसी आज कई पुरुष पहनते हैं। यह चमड़े की एक बड़ी पट्टी होती थी जिससे न केवल कुर्ता उसमें डाला जा सकता था बल्कि तलवार भी रखी जाती थी। लड़ाई में जाने वालों के लिए यह कमरबंद बहुत ही ज़रूरी सामान होता था।

मसीही व्यक्ति की बैल्ट या कमरबंद क्या है ? सत्य। हम पहले ही देख चुके हैं कि हमारा विरोधी धूर्त, चालबाज और छलिया है। उसे हराने का एकमात्र तरीका सच्चाई के साथ उसे हराना है। सच्चाई शत्रु के झूठों को बेनकाब कर देगी। यह सच्चाई बाइबल से मिलती है। यीशु ने प्रार्थना की, ''सत्य के द्वारा उन्हें पवित्र कर: तेरा वचन सत्य है'' (यूहन्ना 17:17)।

शैतान गलती, झूठी शिक्षाओं और आत्मिक तर्कसंगत व्याख्याओं से हमले करता है उसके धोखों से अपनी ज़मीन को बचाने का एकमात्र ढंग अपने आपको सच्चाई से भर लेना है। हमें परमेश्वर के वचन में घुसना, इसे भोजन बना लेना है, अपने मनों को इससे भर लेना और इसे समझने के लिए प्रार्थना करना आवश्यक है। वह सच्चाई वह कमरबंद है, जो बुराई की आत्मिक सेनाओं के विरुद्ध लड़ाई में हमारे लिए शेष सब कुछ इकट्ठा रखेगी।

(2) धार्मिकता की झिलम (6:14)। पौलुस के समय में झिलम का इस्तेमाल दो अलग -अलग ढंगों से किया जा सकता था। कई बार यह भारी सन से बनाई जाती थी जिस पर धातु के छोटे-छोटे टुकड़े लगाए जाते थे। झिलम को बनाने का अधिक सामान्य ढंग ठोस धातु या एक प्रकार की बुनी हुई ज़ंजीर की धातु का प्रयोग किया जाता था। इसे जैसे भी बनाया जाता हो पर झिलम का कम केवल एक था: सिपाही के मुख्य अंगों का बचाव करना। इससे गले से कमर तक, आगे और पीछे उसका शरीर ढका जाता था जिससे उसका धड़ वास्तव में अभेद्य हो जाता। कोई सिपाही बिना अपनी झिलम के युद्ध में कभी नहीं जाता था।

मसीही सिपाही की झिलम धार्मिकता है। यह मसीह में मसीही व्यक्ति की धार्मिकता ही नहीं (2 कुरिन्थियों 5:21), बल्कि शुद्ध जीवन की व्यावहारिक धार्मिकता भी है (इफिसियों 4:24)। हमें झिलम की आवश्यकता है। शैतान गलती से और अशुद्धता से हमारे ऊपर हमला करेगा, जिसके लिए हमें सत्य के कमरबंद की आवश्यकता है। यदि हम पवित्र आत्मा की सामर्थ में भक्तिपूर्ण जीवन बिता रहे हैं तो उसके जलते हुए तीर हमें नहीं लग सकते। अपने प्रतिदिन के जीवन में व्यावहारिक पवित्रता को नज़रअन्दाज़ कर देने का अर्थ अपने आपको शत्रु के हमलों के लिए खुले छोड़ देना है।

(3) सुसमाचार के जूते (6:15)। रोमी सिपाही भारी जूते पहनते थे जिन्हें *caliguli,*[64] कहा जाता था। ये एक विशेष प्रकार के सैंडल होते थे, जिनके तलों में सिपाही को लड़ाई में बेहतर काम करने के लिए कीलें लगी होती थीं। वे आज के आधुनिक खेलों के जूतों के जैसे थे, जिनमें पच्चर लगे होते हैं। सिपाही झाड़ियों के ऊपर से और ऊबड़-खाबड़ इलाके में से आगे बढ़ सकता था। क्योंकि ऐसे जूतों से उसे चलने में आसानी होती थी।

हमारे आत्मिक युद्ध में शैतान हमें हटाने का प्रयास करेगा। हमें बूट पहनने आवश्यक है ताकि हम उसके हमलों में खड़े रह सकें। उन बूटों को, मेल का सुसमाचार कहा जाता है। मसीही व्यक्ति का मेल यह यकीन रखता है कि ''जो मसीह यीशु में है, उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं'' (रोमियों 8:1)। जब हम उन्हें पहनकर खड़े होते हैं तो शैतान हमें गिरा नहीं सकता।

(4) विश्वास की ढाल (6:16)। पहली सदी में दो प्रकार की ढालें होती थीं। एक तो छोटी थी और इसका इस्तेमाल सिपाही द्वारा अकेले-अकेले की लड़ाई में किया जाता था। बाईं ओर पहने होने पर ढाल उसके विरोधी के छुरे के प्रहारों को रोकती थी। यह वह ढाल नहीं है जो यहां पौलुस के मन में थी। इसके बजाय उसने उस शब्द का इस्तेमाल किया जो एक ढाल को दर्शाता है, जो लगभग चार फुट लम्बी और अढ़ाई फुट चौड़ी हो। आमतौर पर यह लकड़ी के दो टुकड़ों से बनाई गई होती और मोटे चमड़े से ढकी मोटी चादर होती थी। स्पष्टतया इसका इस्तेमाल नज़दीकी लड़ाई में नहीं किया जाता था। इस ढाल का एक ही काम था, आक्रमण के समय पूरे शरीर की रक्षा करना।

इन ढालों के किनारे इस प्रकार से बनाए जाते थे कि सिपाहियों की पूरी कतार अपनी ढालों को इकट्ठे करके एक मज़बूत दीवार की तरह शत्रु की ओर बढ़ सकते थे। इससे बेशक हमें यह याद रखने में सहायता मिलती है कि हम इस युद्ध में अकेले नहीं हैं बल्कि एक साझे शत्रु के विरुद्ध लड़ते हुए सिपाहियों की एक सेना हैं।

यह ढाल क्या है जो हमारा बचाव करती है जो संदेहों, झूठों, निंदा के विचारों और पाप के जलते हुए तीरों को रोकती है। हमारे पास केवल एक ढाल है और वह हमारा विश्वास है। हमें बनाए रहने वाला हमारा भरोसा और विश्वास है कि परमेश्वर हमें बनाए रखता है। हम उसमें और उसकी प्रतिज्ञाओं में विश्वास करते हैं। हमें उसके वचन से प्रोत्साहन मिलता है। यूहन्ना ने इसे इस प्रकार कहा है: ''वह विजय जिससे संसार पर जय प्राप्त होती है हमारा विश्वास है'' (1 यूहन्ना 5:4)। परमेश्वर द्वारा दिया गया हमारा विश्वास, हमारा मुख्य बचाव है।

(5) उद्धार का टोप (6:17)। मसीही व्यक्ति को उद्धार का पूरा आश्वासन है। परमेश्वर हमारे मनों को इस युग की भ्रष्ट सोच से बचाता और हमारी सोच की प्रक्रिया पर नियन्त्रण करने लगता है तो शैतान हमें गुमराह नहीं कर सकता। जब हम परमेश्वर के वचन का अध्ययन करते हैं, जब इसके नियमों में मज़बूती से अपने आपको घुसेड़ लेते हैं तो हम शैतान की चालों में नहीं फसेंगे। हम अपने उद्धार की निश्चितता के कारण प्रतिदिन की अपनी लड़ाइयों में लड़ सकेंगे।

(6) आत्मा की तलवार (6:17)। हर रोमी सिपाही के एक ओर उसके कमरबंद से लटकी उसकी तलवार होती है। उसके हथियारों में से केवल यही बचाव और हमले दोनों का काम करती है। शत्रु से अकेले अकेले की लड़ाई में हर सिपाही के लिए उसकी तलवार साथ होना आवश्यक होता था। आमने-सामने की लड़ाई में इस हथियार का इस्तेमाल शत्रु के दिल में

घुसेड़ने के लिए बड़ी स्टीकता से किया जाता था।

मसीही सिपाही के पास भी एक तलवार है। यह तलवार परमेश्वर का वचन है। यह परमेश्वर की ओर से दिया गया हथियार है जिससे मसीही व्यक्ति अपने रक्षा करके शत्रु के विरुद्ध दिलेरी से आगे बढ़ सकता है। यीशु ने परिकल्पना की कि उसके चेले बुराई के विरुद्ध आक्रमणकारी होंगे जब उसने कहा, ''मैं ... अपनी कलीसिया बनाऊंगा, और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे'' (मत्ती 16:18)।

अपने आपको आक्रमण में शामिल करना। शैतान के विरुद्ध युद्ध जीतने के लिए हमारी ईश्वरीय नीति का अन्तिम भाग वास्तव में शत्रु के विरुद्ध आक्रमण में भाग लेना है। परमेश्वर ने हमें निष्क्रिय सिपाही बनने के लिए नहीं बुलाया है। हमें आश्चर्य हो सकता है कि युद्ध का आरम्भ वास्तव में कहां होता है।

> और हर समय और हर प्रकार से आत्मा में प्रार्थना, और बिनती करते रहो, और इसी लिए जागते रहो, कि सब पवित्र लोगों के लिए लगातार बिनती किया करो। और मेरे लिए भी, कि मुझ बोलने के समय ऐसा प्रबल वचन दिया जाए, कि मैं हियाव से सुसमाचार का भेद बता सकूं जिस के लिए मैं जंजीर से जकड़ा हुआ राजदूत हूं। और यह भी कि मैं उस के विषय में जैसा मुझे चाहिए हियाव से बोलूं (6:18-20)।

प्रार्थना युद्ध के लिए तैयार होना नहीं बल्कि युद्ध के आरम्भ में है। लड़ाई के लिए तैयार हो जाने, यह देख लेने कि हमारा विरोधी कौन है और अपने सहयोगियों को देख लेने पर, हम आक्रमण पर जाने को तैयार हैं। प्रभु की सेना घुटनों पर होकर आगे बढ़ती है।

शैतान नहीं चाहता है कि मसीही लोग प्रार्थना करें। हम और चाहे जो कुछ करें उसे उस की परवाह नहीं है। शैतान हमारी योजनाओं का ठट्ठा उड़ाता है परन्तु हमारी प्रार्थनाओं से भय खाता है। उसे मालूम है कि यहीं पर हर मसीही युद्ध को जीत या हार सकता है।

हम अपनी प्रार्थनाओं से बढ़कर कभी मज़बूत नहीं होंगे। प्रभु की कलीसिया की कोई मण्डली इसके लोगों के प्रार्थना भरे जीवनों से अधिक शक्तिशाली नहीं है। यीशु ने चेतावनी दी, ''जागते रहो, और प्रार्थना करते रहो कि तुम परीक्षा में न पड़ो ...'' (मत्ती 26:41)। कलीसिया की आवश्यकता है, जो जीवते परमेश्वर की सेना की आवश्यकता है, प्रार्थना करने वाले और योद्धा हैं। वे सिपाही परमेश्वर की आशीष का दावा करने वाले, उसकी सामर्थ का दावा करने वाले और विरोधी के विरुद्ध ईश्वरीय संसाधनों का दावा करने वाले हैं।

सारांश। एक यूनानी दंतकथा में ट्रोयन युद्ध में अखिलेस सब योद्धाओं में सबसे परिश्रमी था। कहानी के अनुसार अखिलेश जब बच्चा था तो उसकी मां ने उसे पवित्र नदी सटिक्स में डुबो दिया था। इससे उसकी ऐडी को छोड जिससे उसकी मां ने उसे पानी में डुबकी देते हुए पकड़े रखा था, उसे अभेद्य बना दिया। ट्रोयन युद्ध में अखिलेस की एड़ी में एक विषैला तीर लगा और वह मर गया। उसे शत्रु के हमलों से अभेद्य होना चाहिए था परन्तु एक स्थान में वह बचावहीन रह गया।

हम परमेश्वर के महाशत्रु शैतान के विरुद्ध एक बड़ी लड़ाई में लगे हुए हैं। हम शत्रु के लिए आक्रमण की एक भी चीज़ खुली नहीं रखने दे सकते। पौलुस ने हमारे लिए युद्ध की पूरी नीति समझाई है। हमें अपने आपको अपने विरोधी और उसकी चालों से परिचित करना आवश्यक

है। हमें परमेश्वर के *सारे* हथियारों से लैस होना आवश्यक है। हम एक छोटी सी बात को भी नज़रअन्दाज़ करके हम अभेद्य नहीं रह सकते। फिर हमें लड़ाई में हमारी सहायता के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करते हुए काम में लग जाने की आवश्यकता है।

क्रिस बुलर्ड

हमारे सहयोगी (6:13-20)

मसीही लोगों का सामना एक शक्तिशाली शत्रु शैतान से है। परन्तु युद्ध में हम अकेले नहीं हैं। हमें याद दिलाने के लिए कि विजय सम्भव है हमारे आस पास गवाहों का एक बड़ा बादल है (इब्रानियों 12:1, 2)।

हम परमेश्वर की वफ़ादारी को कभी न भूलें जो हमारी सहायता के लिए हमेशा तैयार रहता है (1 कुरिन्थियों 10:13)। उसने हमें हथियारों का पूरा सामान दिया है और शत्रु के विरुद्ध तैयारी और अपने बचाव के लिए प्रार्थना दी (6:13-20)।

अन्त में हमारी ओर मसीह का लहू है (प्रकाशितवाक्य 12:11), जो हमें जय पाने के योग्य बनाता है। हम ''हम उसके द्वारा जिस ने हम से प्रेम किया है, जयवन्त से भी बढ़कर हैं'' (रोमियों 8:37)।

जे लॉकहर्ट

टिप्पणियां

[1]जोसेफ़स *एंटिक्विटीस* 4.8.24. [2]एंड्रयू टी. लिंकोन, *इफिसियंस,* वर्ड बिब्लिकल कमैंट्री, अंक 42 (डलास: वर्ड बुक्स, 1990), 403. [3]6:2, 3 की आज्ञा पुराने नियम से उद्धृत की गई है, इस कारण NASB में ये शब्द बड़ी एबीसी के छोटे अक्षरों में मिलते हैं (देखें निर्गमन 20:12; व्यवस्थाविवरण 5:16)। [4]केन्नथ एस. वुएस्ट, *वुएस्ट 'स' वर्ड स्टडीज़ फ्रॉम द ग्रीक न्यू टैस्टामैंट फॉर द इंग्लिश रीडर: इफिसियंस एंड कोलोसियंस* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1953), 136. [5]पुराने नियम में ''दिनों की लम्बाई'' को परमेश्वर की आज्ञाकारिता के साथ जोड़ा गया है (नीतिवचन 3:1, 2; देखें व्यवस्थाविवरण 30:20)। [6]वही, 137. [7]लिंकोन, 406. [8]वही, 409. [9]वाल्टर बाउर, *ए ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन आफ़ द न्यू टैस्टामैंट एंड अदर अर्ली क्रिश्चियन लिटरेचर,* 3रा संस्क., संशो. व संपा. फ्रैडरिक विलियम डैंकर (शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रैस, 2000), 748. [10]सी. जी. विलके एंड विलिबल्ड ग्रिम, *ए ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामैंट,* अनु. व संपा. जोसेफ हेनरी थेयर (एडिनबर्ग: टी. एंड टी. क्लार्क, 1901; रिप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1977), 473.

[11]लिंकोन, 407-8. [12]द *एक्सपोज़िटर'स ग्रीक टैस्टामेंट,* संपा. डब्ल्यू. रॉबर्टसन निकोल (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1967), 3:377 में एस. डी. एफ. सैलमण्ड, ''द एपिस्टल टू द इफिसियंस।'' [13]लिंकोन, 408. [14]देखें 1 कुरिन्थियों 7:21, 22; कुलुस्सियों 3:22; 4:1; 1 तीमुथियुस 6:1, 2; तीतुस 2:9, 10; 1 पतरस 2:18-25. [15]स्पायरस ज़ोडिएट्स, सम्पा., द *कम्पलीट वर्ड स्टडी न्यू टैस्टामेंट,* 2रा संस्क. (चटनूगा, टैनिसी: एएमजी पब्लिशर्स, 1991), 963. [16]वही, 965. [17]सैलमण्ड, 378-79. [18]ज़ोडिएट्स, 889. [19]लिंकोन, 422. [20]सैलमण्ड, 378-79.

[21]लिंकोन, 423-24. [22]फिलिप्पियों 3:1; 4:8; 2 थिस्सलुनीकियों 3:1 में भी इस शब्द का अनुवाद ''अन्त में'' किया गया है। [23]लिंकोन, 441. [24]वही, 442. [25]वही। [26]सैलमण्ड, 382. [27]लिंकोन, 443. [28]सैलमण्ड, 383. [29]लिंकोन, 444. [30]देखें 2:2; 2 कुरिन्थियों 2:11; 10:4; 1 पतरस 5:8.

[31]देखें 2 कुरिन्थियों 11:14; 1 तीमुथियुस 4:1; प्रकाशितवाक्य 2:9. [32]एथलबर्ट डब्ल्यू. बुलिंगर, *ए क्रिटिकल*

लैक्सिकन एंड कन्कॉर्डेंस टू द इंग्लिश एंड ग्रीक न्यू टैस्टामैंट (लंदन: सेमुएल बैगस्टर एंड सन्स, तिथि नहीं; रिप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, रिजेंसी रेफरेंस लाइब्रेरी, 1975), 893. [33]वुएस्ट, 142. [34]गलातियों 5:1; 1 थिस्सलुनीकियों 3:8; 2 थिस्सलुनीकियों 2:15 भी देखें। [35]NASB के कुछ मुद्रणों की टिप्पणी में कहा गया है ''[मूलतया], तेरे मन के कटिवस्त्रों।'' [36]वुएस्ट, 143. [37]देखें इफिसियों 1:13; 2 थिस्सलुनीकियों 2:10, 12; 1 तीमुथियुस 3:15; 1 पतरस 1:22. [38]''सत्य'' और ''विश्वास'' एक ही इब्रानी शब्द स्टेम से निकले हैं। (रॉबर्ट यंग, *यंग'स एनेलिटिकल कन्कॉर्डेंस टू द बाइबल,* 22वां अमेरिकी संस्क., संशो. [न्यू यॉर्क: फंक एंड वागलस कं., 1936], 325, 1004–5.) [39]सैलमण्ड, 386. [40]वही।

[41]वारेन बेकर, सम्पा., *द कम्पलीट वर्ड स्टडी ओल्ड टैस्टामैंट* (चटनूगा, टैनिसी: एएमजी पब्लिशर्स, 1994), 2357. [42]बुलिंगर, 693. [43]जोसेफस *वार्स,* 6.1.8. [44]लिंकोन, 449. [45]वुएस्ट, 144. [46]लिंकोन, 449. [47]सैलमण्ड, 387. [48]लिंकोन 449–50. [49]ज़ोडिएट्स, 862. [50]वही, 866.

[51]बुलिंगर, 754. [52]ज़ोडिएट्स, 954. [53]सैलमण्ड, 388. [54]ज़ोडिएट्स, 951–52. [55]रोमियों 1:9, 10; इफिसियों 5:20; फिलिपियों 1:4; कुलुस्सियों 1:3; 4:12; 1 थिस्सलुनीकियों 5:17 भी देखें। [56]वुएस्ट, 145. [57]सैलमण्ड, 390. [58]वही। [59]लिंकोन 454. [60]बुलिंगर, 222; और बाउर, 226.

[61]बाउर, 916. [62]इससे शैतान पर इस अध्ययन का भाग समाप्त होता है जिसे जे लॉकहर्ट ने लिखा था। इस अध्ययन का शेष भाग क्रिस बुलर्ड ने लिखा। [63]जेम्स डाब्सन, *डेयर टू डिस्सिप्लिन* (व्हीटन, इलिनॉय: टिंडेल हाउस पब्लिशर्स, 1970), 15. [64]दुष्ट रोमी सम्राट कलिगुला के नाम का अर्थ है ''छोटे जूते'' या ''छोटे बूट।''